तापमान
अधिकतम 29.4 डिग्री
न्यूनतम 24.6 डिग्री

हरिभूमि
सोनीपत भूमि
रोहतक, रविवार, 10 अगस्त 2025

11 दून स्कूल के मुक्केबाजों ने दिखाया मुक्के का दम

12 पूर्व मंत्री और मेयर को बांधी राखी

स्टेडियम के पास गोहाना रोड।

ककरोई चौक का दृश्य।

ककरोई चौक का दृश्य।

खबर संक्षेप

चौक के पास पैदल जा रही महिला का पर्स छीना

सोनीपत। बस अड्डा के पास स्थित देवीलाल चौक के निकट पैदल जा रही महिला से बाइक सवार झपटमार पर्स छीनकर भाग गया। न्यू कॉलोनी निवासी गीता रानी ने सिविल लाइन थाना पुलिस को बताया कि वह शुक्रवार को पैदल बस अड्डा की तरफ जा रही थी। इसी दौरान उनके साथ वारदात हो गई। बाइक सवार ने चेहरे पर कपड़ा बांध रखा था। पर्स में मोबाइल, 10 हजार रुपये, डेबिट कार्ड, आधार कार्ड, पैन कार्ड, बैंक की एफड़ी, सोने की अंगूठी, बैंक की पासबुक व अन्य कागजात थे। झपटमार काले रंग की बाइक पर सवार था। पुलिस ने आरोपी की तलाश शुरू कर दी है।

पुलिस ने बाइक चोरी का आरोपी किया गिरफ्तार

सोनीपत। राई थाना पुलिस ने बाइक चोरी के आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी उत्तर प्रदेश के बागपत का रहने अंकित है। गांव राठधना निवासी प्रिंस ने पुलिस को बताया था कि 11 मई को उनकी बाइक चोरी हो गई थी। सहायक उप निरीक्षक सत्येंद्र ने आरोपी को गिरफ्तार लिया है।

जाहरी में फैक्टरी से सामान चोरी
सोनीपत। गांव जाहरी स्थित स्टार्क इंडिया फैक्टरी से चोर सामान ले गए। मूलरूप से हिसार के बकलाना हॉल हनुमान नगर सोनीपत निवासी नवीन ने सदर थाना पुलिस को बताया कि वह जाहरी गांव के पास में फैक्टरी चलाते हैं। जिसमें गाडि़यों के मेट बनाए जाते हैं। चोर मशीनों के पैनल के कॉपर के तार, यूपीएस की 30 बैटरी, दो बंडल तार चोरी कर ले गए।

टीडीआई में युवक के गले से चेन झपटी

सोनीपत। कुंडली में टीडीआई किंग्सबरी के पास बाइक सवार झपटमार युवक की सोने की चेन छीनकर फरार हो गए। शोर मचाने पर जब तक आसपास के लोग मौके पर पहुंचे तब तक आरोपी फरार हो चुके थे। गोहाना निवासी मनोज कुमार ने बताया कि वह किसी काम से कुंडली आया हुआ था। जब वह नांगल कलां वाले रोड पर गोल बिल्डिंग के सामने खाना लेने के लिए ढाबा पर गए थे। जब वे ढाबा के सामने बाइक के साथ खड़े थे उसी दौरान एक बाइक पर दो युवक आए और उसके गले से सोने की चेन झपट ली। जब उसने शोर मचाया तथा आरोपियों को पीछा किया तो वे फरार हो गए।

जिले में सुबह से झमाझम बारिश, तापमान में आई गिरावट

6 घंटे बारिश, ड्रेनेज सिस्टम फेल, अंडरपास में 13 फीट पानी, दो हिस्सों में बंटा शहर

घरों और दुकानों में जलभराव ने बढ़ाई आफत, बरसात से किसानों के खिले चेहरे, पानी में फंसे वाहनों को धक्का मारते दिखे लोग, बरसात में करंट लगने से दो लोगों को गंवानी पड़ी अपनी जान

ककरोई चौक पर जलभराव।

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

जिले में शनिवार सुबह 6 बजे से शुरू हुई 6 घंटों की बारिश ने सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए। इस दौरान बादलों ने सैंकड़ों एमएम पानी बरसाया। जिसका फायदा आम आदमी को कम मिला, लेकिन नुक्सान ज्यादा लगा। 6 घंटों तक चली बारिश की वजह से शहर का ड्रेनेज सिस्टम जवाब दे गया। पानी निकासी व्यवस्था पूरी तरह से ठप हो गई। शहर की हर सड़क, गली मोहल्ला तीन से चार फुट पानी में तालाब बन गया। इससे भी ऊपर शनि मंदिर अंडरब्रिज में 13 फुट तक पानी भर गया, जिसकी वजह से शहर दो हिस्सों में बंट गया।

इसके अलावा घरों, दुकानों में जलभराव भी हो गया। इसी जलभराव के चक्कर में मिशन चौक पर एक दुकानदार और उसके कारिंदे की करंट लगने से जान भी चली गई। हालांकि बारिश की वजह से ग्रामीण क्षेत्र में किसानों के चेहरे खिल गए। किसानों को धान की सिंचाई करने की आवश्यकता नहीं रहेगी। कपास में नुकसान का खतरा मंडराने लगा है। कृषि विभाग ने किसानों को सलाह दी है कि पानी खेत में खड़ा न रहने दे। बारिश से सब्जी में भी नुकसान हो सकता है।

शनिवार सुबह पौने छह बजे अचानक मौसम में हुए परिवर्तन के बाद रुक-रुककर बारिश होती रही। रिकॉर्ड बारिश से हालात ही बिगड़ गए। झमाझम बारिश से शहरी क्षेत्र में ड्रेनेज सिस्टम फेल हो गया और सड़कों व कॉलोनियों में पानी भर गया। जिसके कारण लोगों को परेशानियों का सामना करना पड़ा। बारिश से गर्मी व उमस से में जूझ रहे लोगों को राहत जरूर दी है। बारिश से नगर निगम की निकासी व्यवस्था की पोल खुल गई।

अंडरब्रिज जलमग्न, दो हिस्सों में शहर

शनिवार को हुई बारिश से शहर एक बार फिर दो हिस्सों में बंट गया। शहर में हुई बारिश के कारण वाहन चालकों के लिए रेलवे लाइन पार करना मुश्किल हो गया। सारंग रोड अंडरपास के साथ-साथ शनि मंदिर रोड अंडरब्रिज के पानी भर गया है। यही नहीं शहर की अधिकतर सडकों पर जलभराव के कारण ट्रैफिक जाम जैसी स्थिति बनी रही। कई वाहन पानी में बंद हो गए हैं। उन्हें निकालने के लिए चालकों को दिक्कत झेलनी पड़ी। ककरोई चौक के पास एक महिला पानी में गिर गई। करीब चार फीट तक भरे पानी में गिरने से महिला ही हालत बिगड़ गई। राहगीरों ने महिला को पानी से निकाला।

राई में 140, सोनीपत में 112 एमएम बरसात

शनिवार को सुबह से ही झमाझम बारिश का दौर जारी रहा। सबसे अधिक बारिश राई ब्लाक में दर्ज हुई। राई ब्लॉक में रिकॉर्ड 140 एमएम बारिश हुई। जोकि चार सालों में पहली बार इतनी अधिक हुई थी, चार वर्ष पहले राई ब्लॉक में 117 एमएम बारिश हुई थी। सोनीपत ब्लॉक में 112 एमएम, खरखौदा में 54 एमएम, गोहाना में 12 एमएम, खानपुर कलां में 40 एमएम व गन्नौर में 52 एमएम बारिश हुई। बारिश से अधिकतम तापमान 29 डिग्री व न्यूनतम 26 डिग्री पर पहुंच गया। मौसम विभाग के अनुमान के अनुसार तापमान में कमी बनी रहेगी।

घरों व दुकानों में घुसा पानी

बारिश से लोगों के घरों और दुकानों में भी पानी घुस गया। शहर के शनि मंदिर अंडर ब्रिज क्षेत्र के आसपास पुरखास रोड, ककरोई चौक, गीता भवन चौक क्षेत्र में तो दुकानदारों ने अपनी दुकाने ही बंद रखी। जिससे व्यापार भी प्रभावित रहा। ककरोई चौक के पास मेडिकल स्टोर में पानी भरने से दुकानदार को भारी नुकसान हुआ है। दुकानदार ने प्रशासन पर लापरवाही के आरोप लगाए हैं।

वाहन चालकों को नुकसान

रक्षा बंधन पर्व के चलते बड़ी संख्या में लोग अपने निजी वाहनों में घरों से बाहर निकले थे। शहर में हालात तालाब की तरह बने थे। तीन से चार फुट तक पानी में वाहन फंस गए। एम्बुलेंस को भी मशक्कत से निकालना पड़ा। वाहन बंद होने से चालकों को मैकेनिक के पास हजारों रुपये खर्च करने पड़े। कई वाहनों को सडक से हटाने के लिए क्रेन बुलाई तो कई युवकों ने वाहनों को धकेलकर निकालने के 500 रुपये वसूले।

दुकानदार परेशान, दुविधा में बहनें

शनिवार को रक्षाबंधन पर्व पर सुबह से ही जारी बारिश ने बहनों की परेशानी बढ़ा दी है। भाइयों की कलाई पर राखी बांधने के लिए दूरदराज से रही बहनों को भाइयों तक पहुंचने में मशक्कत करनी पड़ी। वहीं बारिश से स्टाल व टैंट लगाकर राखी बेच रहे विक्रेताओं की समस्या बढ़ गई है। उन्हें अपने स्टाल उठाने पड़े।

शहर में जगह-जगह पानी भर गया। गीता भवन चौक, ककरोई चौक, बहालगढ़ रोड, कामी रोड, गोहाना रोड, वैक्सन कालोनी, औद्योगिक क्षेत्र, मॉडल टाउन, पुरखास रोड, सेक्टर-14 व 15, अग्रसेन चौक सहित अधिकतर स्थानों पर पानी भर गया। सबसे गंभीर हालात ककरोई रोड चौक पर दिखाई दिए।

जलभराव पर मेयर ने किया डिस्पोजलों का दौरा

सोनीपत। भारी बरसात के चलते शहर में जल भराव होने पर नगर निगम मेयर राजीव जैन ने विभिन्न डिस्पोजलों का दौरा किया और सही ढंग से सभी मोटरो को चलवाया। ड्रैन नंबर 6 पर स्थित आई पी एस पर बिजली के फाल्ट की समस्या को भी मौके पर पहुंचकर ठीक करवाया। राजीव जैन सभी अधिकारियों को फोन पर निर्देश देते रहे ताकि धीरे-धीरे पानी का सार कम हो सके।

बारिश में पेड़ गिरने से पांच गांवों की बिजली ठप, 9 घंटे बाद बहाल

गन्नौर । शनिवार सुबह हुई तेज बरसात ने क्षेत्र के कई गांवों में मुसीबत खड़ी कर दी। मुरथल से भोगीपुर पावर हाउस तक पहुंच रही मुख्य विद्युत लाइन पर अचानक पेड़ गिर गए। पेड़ गिरने से बिजली के तार क्षतिग्रस्त हो गए और गांव भोगीपुर, राजलू गढ़ी, पांची जाटान, उदेशीपुर और अगवानपुर में बिजली आपूर्ति ठप हो गई। सुबह करीब 8 बजे अचानक लाइट चली गई, जिससे लोगों के घरों और खेतों का कामकाज रुक गया। बिजली गुल होते ही घरों में पंखे-कूलर बंद रहने से उमस ने लोगों को बेहाल कर दिया। कई लोग सुबह के जरूरी घरेलू काम भी नहीं कर पाए। छोटे व्यापारी और दुकानदार भी बिजली न होने से परेशान दिखे। फाल्ट की सूचना मिलते ही बिजली निगम के जेई और कर्मचारियों की टीम मौके पर पहुंची। सबसे पहले लाइन पर गिरे पेड़ को हटाने का कार्य शुरू किया गया। इसके बाद टूटे तारों को बदला गया और पोलों की मरम्मत की गई। करीब 9 घंटे तक मेहनत के बाद बिजली सप्लाई शुरू हो पाई। शाम करीब 4 बजे बिजली सप्लाई बहाल होने पर ग्रामीणों ने राहत की सांस ली। ग्रामीणों ने कहा कि बरसात के मौसम में लाइन के आसपास लगे पेड़ों की समय पर छंटाई और देखरेख जरूरी है, ताकि भविष्य में ऐसी परेशानी न हो।

शनि मंदिर अंडरब्रिज

दुकान में घुसा पानी, करंट से कारिंदे व व्यापारी की मौत, बेटा और कारिंदा बचे

■ दुकान के पीछे लगी सीढ़ियों से ऊपर चढ़ते समय लगा करंट।

सोनीपत। बारिश के बाद मिशन चौक पर हुए दर्दनाक हादसे में फर्नीचर व बर्तन कारोबारी और उनके कारिंदे की करंट लगने से मौत हो गई। हादसे में कारोबारी के बेटे और दूसरे कर्मी को भी हल्का करंट लगा, वह बाल-बाल बच गए। पुलिस ने शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम कराया। मिशन चौक निवासी नरेंद्र कुमार गुप्ता (61) घर के पास ही गुप्ता फर्नीचर व बर्तन भंडार के नाम से दुकान चलाते थे। जहां मूलरूप से उत्तर प्रदेश के बरेली हाल पत्थर वाली गली आर्य नगर निवासी शुभम (20) और रोहित काम करते थे। शनिवार सुबह से ही तेज बारिश में नरेंद्र कुमार गुप्ता की दुकान में भी पानी घुस गया था। बारिश रुकने के बाद दोपहर करीब ढाई बजे वह दुकान पर पहुंचे थे। उनके साथ बेटे दीपांशु भी दुकान पर आ गए थे। दुकान के दोनों तरफ गली होने के चलते शटर लगे हैं। आगे सफाई के दौरान नरेंद्र ने कारिंदे शुभम को पिछले शटर के पास लगी लोहे की सीढ़ियों के रास्ते छत पर जाने को कहा था।

मेयर मौके पर पहुंचे

हादसे की सूचना के बाद मेयर राजीव जैन भी अस्पताल में पहुंचे और मृतक के परिजनों व पुलिस से बातचीत की। जिला व्यापार मंडल के अध्यक्ष संजय सिंगला पहले मौके पर पहुंचे और परिवार को सांत्वना दी। उसके बाद अस्पताल में आए। उन्होंने बताया कि मामले में निष्पक्ष जांच कराने की मांग की जाएगी। व्यापार मंडल पीड़ित परिवार के साथ है।

हर पहलू से जांच

करंट लगने से दुकानदार व कारिंदे की मौत हो गई। पुलिस मामले में हर पहलू से मामले की जांच कर रही है।

-अरुण कुमार इंस्पेक्टर, थाना प्रभारी, सिटी सोनीपत।

शुभम को बचाते समय नरेंद्र को लगा करंट

शुभम दुकान के पिछले हिस्से में लोहे की सीढ़ियों की तरफ चले गए। जब वह करीब 20-25 मिनट तक वापस नहीं पहुंचे तो नरेंद्र कुमार ने दूसरे कारिंदे रोहित को देखने के लिए भेजा। रोहित को शुभम सीढ़ियों पर शुभम को बेसुध पड़ा मिला। तो इसकी जानकारी नरेंद्र गुप्ता दी। नरेंद्र गुप्ता, रोहित व नरेंद्र के बेटे दीपांशु तीनों सीढ़ियों की तरफ दौड़े व नरेंद्र ने देखा कि शुभम को करंट लगा था। डंडे से शुभम को हटाने के दौरान नरेंद्र भी करंट की चपेट में आ गए। उनके बेटे दीपांशु व रोहित ने उन्हें बचाने की कोशिश की तो उन्हें भी करंट का झटका लगा। हालांकि दूर गिरने से वह बच गए। रोहित थोड़ा झुलस गया। दोनों ने आसपास के लोगों को अवगत कराया और बिजली सप्लाई को बंद कराया।

294 सिपाहियों ने दिया बी1 टेस्ट

सोनीपत। पुलिस आयुक्तालय सोनीपत के 294 सिपाहियों ने शुक्रवार को आयोजित B1 टेस्ट परीक्षा में हिस्सा लिया। यह परीक्षा पुलिस कर्मियों की कार्यकुशलता, ज्ञान और दक्षता का मूल्यांकन करने के उद्देश्य से कराई गई। पुलिस नियमों के अनुसार, इस परीक्षा में उत्तीर्ण सिपाहियों को प्रमोशन कोर्स पूरा करने के बाद हेड कांस्टेबल के पद पर पदोन्नति दी जाएगी। B1 टेस्ट में कानून के प्रावधान, पुलिस कार्यप्रणाली, आपराधिक जांच, ट्रैफिक प्रबंधन और जनसंपर्क कौशल जैसे विषयों पर आधारित प्रश्न पूछे गए। पूरी परीक्षा प्रक्रिया वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों की देखरेख में पारदर्शी तरीके से संपन्न हुई। पुलिस आयुक्त ममता सिंह ने कहा कि इस तरह की परीक्षाएं न केवल पुलिस बल की कार्यकुशलता को बढ़ाती हैं, बल्कि कर्मियों को अपने दायित्वों के प्रति और अधिक जागरूक व जिम्मेदार बनाती हैं। उन्होंने सभी प्रतिभागियों को शुभकामनाएं देते हुए विश्वास जताया कि बड़ी संख्या में सिपाही सफलता प्राप्त करेंगे।

आपसी रंजिश में बड़े ने छोटे भाई पर किया सुए से हमला, गंभीर

गन्नौर। खेड़ी रोड गांधीनगर में रंजिश के चलते बड़े भाई ने छोटे भाई पर नुकीले सुएं से ताबड़तोड़ हमला कर उसे गंभीर रूप से घायल कर दिया। घटना में घायल को रोहतक पीजीआई में भर्ती कराया गया है, जहां उसकी हालत नाजुक बनी हुई है। जानकारी के अनुसार, गांधीनगर निवासी पवन उर्फ भगता का शुक्रवार को अपने छोटे भाई राजेंद्र से किसी बात को लेकर विवाद हो गया। आरोप है कि शुक्रवार की रात पवन ने अपने साले लाखन माजरा हाल गांधी नगर निवासी अमित के साथ मिल कर राजेंद्र पर हमला कर दिया। आरोपितों ने सुबह से करीब 5-6 बार वार किए, जिससे राजेंद्र लहूलुहान होकर जमीन पर गिर पड़ा। शोर सुनकर आसपास के लोग मौके पर पहुंचे और घायल को तुरंत अस्पताल पहुंचाया। घायल के चाचा मोतीराम ने इस संबंध में थाना गन्नौर में पवन उर्फ भगता और उसके साले लाखन माजरा हाल गांधीनगर निवासी अमित के खिलाफ शिकायत दी। पुलिस ने केस दर्ज कर आरोपित पवन को गिरफ्तार कर लिया। शनिवार को पुलिस ने आरोपित को अदालत में पेश किया, जहां से उसे जेल भेज दिया गया। पुलिस का कहना है कि मामले की जांच जारी है और फरार आरोपित अमित की तलाश की जा रही है।

■ दोनों भाईयों में किसी बात पर शुक्रवार को हुआ था विवाद।

आरोपी पवन।

जीटी रोड से दिल्ली के लिए दूसरे मार्गों से निकाला जाएगा

शहर में पांच दिन भारी वाहनों की नो एंट्री

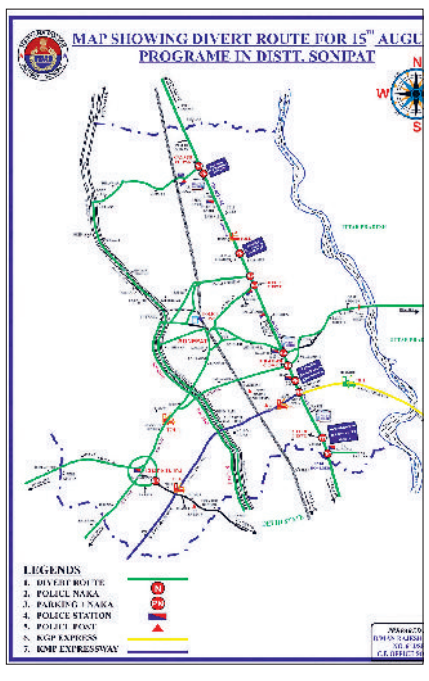

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

स्वतंत्रता दिवस पर दिल्ली में सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत बनाने और यातायात को नियंत्रित करने के लिए भारी वाहनों के प्रवेश पर सख्त पाबंदी लागू की जाएगी। इसके लिए जीटी रोड से दिल्ली जाने वाले वाहनों को अन्य मार्गों से गुजारा जाएगा। जाम से बचने के लिए पुलिस ने भारी वाहनों की पार्किंग का भी अलग से प्रबंध किया है।

डीसीपी प्रबिना पी ने बताया कि दिल्ली में स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन होना है। उसके चलते निश्चित दिन भारी वाहनों का दिल्ली में प्रवेश बंद रहेगा। ऐसे में भारी वाहनों को 10 अगस्त की रात आठ बजे से 11 अगस्त को दोपहर डेढ़ बजे तक, 12 अगस्त की रात आठ बजे से 13 अगस्त को दोपहर डेढ़ बजे तक और 14 अगस्त की रात आठ बजे से 15 अगस्त को आयोजन के संपन्न होने तक दिल्ली में नहीं जाने दिया जाएगा। जीटी रोड पर भीड़ से बचने के लिए पानीपत से सनौली होकर तथा सोनीपत से गढ़ मिर्कपुर होते हुए वाया बागपत वाहन दिल्ली जा सकते हैं। इसी प्रकार गुरुग्राम की तरफ जाने वाले वाहन वाया बहादुरगढ़ जा सकते हैं। परेशान से बचने के लिए इसका पालन करें।

फिलहाल यह रहेगी व्यवस्था

निर्धारित तिथियों को भारी वाहनों को दिल्ली की ओर जाने से पहले ही सर्विस-रोड और निर्धारित पार्किंग स्थलों की ओर मोड़ा जाएगा। प्रमुख पार्किंग स्थल बड़ी औद्योगिक क्षेत्र का गेट नंबर दो, कुराड़ गोहाना बाईपास डायवर्जन, राजीव गांधी एजुकेशन सिटी, केजीपी की तरफ उतरने वाला मार्ग (दिल्ली की तरफ) व एचएसआईआईडीसी कुंडली रहेगा।

हाइवे पर 13 स्थानों पर लगेंगे पुलिस नाका

नेशनल हाईवे-44 पर 13 पुलिस नाके लगाए जाएंगे। जिसमें जीटी गन्नौर फ्लाईओवर के नीचे, काली माता मंदिर बड़ी के सामने, बड़ी गांव के सामने दो नाके लगेंगे, मुरथल में रॉयल ढाबे के पास नाका लगाया जाएगा। कुराड़ बाईपास, 334 बी के नीचे राई के पास दो नाके लगाए जाएंगे। एनएच-44 पर अशोका विवि के कट पर, केएमपी-केजीपी जीरो प्वाइंट पर दो नाके, ड्रेन नंबर आठ फ्लाईओवर के पास, एचएसआईआईडीसी कुंडली निफ्टम चौक के पास नाका लगाया जाएगा।

ओवरस्पीडिंग में पुलिस ने काटा 12 हजार का चालान

गन्नौर। जीटी रोड पर सनपेड़ा के पास एक वाहन का ओवरस्पीड का चालान कट गया, जबकि वाहन मालिक का दावा है कि चालान की तारीख व समय पर उसकी गाड़ी वहां मौजूद ही नहीं थी। वाहन मालिक का दावा है कि उसकी गाड़ी का फर्जी नंबर प्लेट लगाकर ट्रैफिक नियम तोड़ कर चालान किया। पीड़ित ने मामले की शिकायत थाना बड़ी में देकर कार्रवाई की मांग की है। शिकायत में आलोक सैनी ने नदी रोड, मुज्जफरनगर, उत्तरप्रदेश ने बताया कि उसके पास क्रेटा गाड़ी है, जिसका नंबर यूपी-16डीपी-5409 है। गत 19 मार्च की रात 11 बजकर 58 मिनट पर उसकी गाड़ी का सनपेड़ा के पास जीटी रोड पर ओवरस्पीडिंग का 12 हजार रुपये का चालान कट गया। अब उसके पास चालान की कापी पहुंची। जबकी उसकी गाड़ी 19 मार्च को उसके पास ही थी। अलोक सैनी का आरोप है कि उसकी गाड़ी की नंबर प्लेट का कोई दूसरा व्यक्ति फर्जी तरीके से प्रयोग कर उसका चालान कटवा रहा है। पुलिस को शिकायत देकर फर्जी तरीके से उसकी गाड़ी की नंबर प्लेट लगा कर घूमने वाले का पता लगा कर उसके खिलाफ कार्रवाई करने की मांग की। पुलिस ने अज्ञात के खिलाफ केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

■ वाहन मालिक का आरोप, फर्जी नंबर प्लेट लगाकर कटवाया उसकी गाड़ी का चालान

■ 19 मार्च को घर पर थी उसकी गाड़ी, जीटी रोड पर कटा चालान

तय कर सही स्कीम में निवेश करने से मिलेगा फायदा | म्यूचुअल फंड और गोल्ड निवेश करके बड़ा फंड तैयार करें | अपनी पूरी रकम एक ही जगह निवेश न करें, विविधता रखें

प्लानिंग बनाकर करें निवेश, 10 साल में बन सकते हैं करोड़पति

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

सोने में निवेश को लेकर अलग-अलग एक्सपर्ट की राय अलग-अलग है। कुछ जानकार सोने में निवेश को अच्छा मानते हैं तो कई का कहना है कि इसमें रिटर्न कोई फिक्स नहीं है। इतिहास में ऐसे कई मौके आए हैं जब सोने ने नेगेटिव रिटर्न दिया है। यानी इसने निवेशकों का नुकसान किया है। वहीं कई बार पॉजिटिव रिटर्न न के बराबर रहा है।

जब भी बात करोड़पति बनने की आती है तो ऐसा लगता है कि यह बहुत मुश्किल है। काफी लोग एक लाख रुपये महीने की सैलरी होने के बावजूद एक करोड़ रुपये का फंड इकट्ठा नहीं कर पाते हैं। हालांकि यह प्लानिंग के साथ निवेश किया जाए तो यह कुछ मुमकिन है। आप सही प्लानिंग के जरिए निवेश करके मात्र 10 साल में ही करोड़पति बन सकते हैं। अगर आपकी उम्र 35 साल है और आप अगले 10-12 सालों में 1 करोड़ रुपये का फंड बनाना चाहते हैं, तो ये जानकारी आपके लिए काफी अहम हो सकती है।

जानकारों के अनुसार म्यूचुअल फंड और गोल्ड आदि जगह निवेश करके बड़ा फंड तैयारी किया जा सकता है। म्यूचुअल फंड का रिटर्न शेयर मार्केट के प्रदर्शन पर निर्भर करता है। जानकारों के मुताबिक पूरी रकम एक ही जगह निवेश न करें। पोर्टफोलियो में विविधता होनी चाहिए। एक्सपर्ट के अनुसार करोड़पति बनने के लिए जल्द से जल्द निवेश शुरू कर देना चाहिए। अगर कोई शख्स 35 साल की उम्र में निवेश शुरू करता है तो वह 10 से 12 साल में करोड़पति बन सकता है। हालांकि इस दौरान निवेश में रिस्क लेना भी जरूरी होगा। इसके लिए कुछ रिश्क लें और लंबी अवधि के निवेश का प्लान तैयार कर आगे बढ़ें। इससे आप आसानी से करोड़पति बना पाएंगे और अपने धन से भविष्य को सुरक्षित कर पाएंगे। एक्सपर्ट कहते हैं कि कम जोखिम वाले निवेश से बहुत ज्यादा रिटर्न की उम्मीद नहीं करनी चाहिए। उदाहरण के लिए, लार्जकैप स्कीम्स ने पिछले पांच सालों में 14.02% का रिटर्न दिया है। इसका मतलब है कि अगर आप कम जोखिम लेंगे, तो आपको रिटर्न भी थोड़ा कम मिलेगा।

कहां करें निवेश

आप अपने पैसे को अलग-अलग जगहों पर निवेश कर सकते हैं। जैसे कि 20% ग्रोथ वाले फ्लेक्सी कैप फंड में, 20% वैल्यू वाले फ्लेक्सी कैप फंड में, 20% कॉन्ट्रा फंड में, 20% ग्रोथ वाले मिडकैप फंड में और 20% ग्रोथ वाले स्मॉल कैप फंड में निवेश कर सकते हैं। इस तरह से निवेश करने से आप अलग-अलग मार्केट कैप और स्टाइल में निवेश कर पाएंगे। इससे आपके पैसे के डूबने का खतरा कम होगा और आपको अच्छा रिटर्न मिलने की संभावना बढ़ जाती है।

करोड़पति बनने के लिए कितना निवेश करें

अगर आप 10 साल में 12% सीएजीआर (कंपाउंडेड एनुअल ग्रोथ रेट) के साथ 1 करोड़ रुपये का फंड तैयार करना चाहते हैं, तो आपको हर महीने 45,000 रुपये एसआईपी के जरिए म्यूचुअल फंड में निवेश करनी होगी। वहीं, 12 साल में करोड़पति बनना चाहते हैं तो यह निवेश 35,000 रुपये महीने का होगा। हालांकि 10 से 12 साल बाद एक करोड़ रुपये की वैल्यू कम हो जाएगी। इसलिए एक्सपर्ट कहते हैं कि हर साल एसआईपी की रकम 5 से 10 फीसदी बढ़ाते जाएं।

गोल्ड कितना जरूरी

सोने में निवेश को लेकर अलग-अलग एक्सपर्ट की राय अलग-अलग है। कुछ जानकार सोने में निवेश को अच्छा मानते हैं तो कई का कहना है कि इसमें रिटर्न कोई फिक्स नहीं है। इतिहास में ऐसे कई मौके आए हैं जब सोने ने नेगेटिव रिटर्न दिया है। यानी इसने निवेशकों का नुकसान किया है। वहीं कई बार पॉजिटिव रिटर्न न के बराबर रहा है।

ऐसे करें निवेश की प्लानिंग

चरण 1 : वित्तीय लक्ष्यों का निर्धारण

1. **लक्ष्यों की पहचान:** अपने वित्तीय लक्ष्यों को निर्धारित करें, जैसे कि रिटायरमेंट के लिए बचत, बच्चों की शिक्षा, या घर खरीदना।
2. **लक्ष्यों की प्राथमिकता:** अपने लक्ष्यों को प्राथमिकता दें और उनकी समय सीमा निर्धारित करें।

चरण 2 : जोखिम सहनशक्ति का मूल्यांकन

1. **जोखिम सहनशक्ति का मूल्यांकन:** अपनी जोखिम सहनशक्ति का मूल्यांकन करें और यह निर्धारित करें कि आप कितना जोखिम उठाने को तैयार हैं।
2. **निवेश विकल्पों का चयन:** जोखिम सहनशक्ति के अनुसार निवेश विकल्पों का चयन करें।

चरण 3 : निवेश विकल्पों का चयन

1. **निवेश विकल्पों की जानकारी:** विभिन्न निवेश विकल्पों की जानकारी प्राप्त करें, जैसे कि स्टॉक, म्यूचुअल फंड, ईटीएफ, और बॉन्ड।
2. **निवेश विकल्पों का चयन:** वित्तीय लक्ष्यों व जोखिम सहनशक्ति के अनुसार निवेश विकल्पों का चयन करें।

चरण 4 : निवेश योजना का निर्माण

1. **निवेश योजना का निर्माण:** अपने वित्तीय लक्ष्यों और निवेश विकल्पों के अनुसार योजना बनाएं।
2. **निवेश की राशि:** निवेश की राशि निर्धारित करें और नियमित निवेश करने का निर्णय लें।

चरण 5 : निवेश की निगरानी और समीक्षा

1. **निवेश की निगरानी:** अपने निवेश की निगरानी करें और आवश्यकतानुसार बदलाव करें।
2. **निवेश की समीक्षा:** यह सुनिश्चित करें कि लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद कर रहे हैं।

अतिरिक्त सुझाव

1. **विविधीकरण :** अपने निवेश को विविध बनाएं और एक ही निवेश विकल्प में अधिक जोखिम न उठाएं।
2. **नियमित निवेश :** नियमित निवेश करने से आपके निवेश की राशि बढ़ सकती है।

स्पेशियलाइज्ड इनवेस्टमेंट फंड

चढ़ते और गिरते दोनों शेयरों पर दांव लगाने का मौका

काम की बात
बिजनेस डेस्क

स्पेशियलाइज्ड इनवेस्टमेंट फंड (एसआईएफ) गिरते बाजार में भी पैसे कमाने का मौका देता है। लेकिन, यह फंड कमजोर दिल वाले इनवेस्टर्स के लिए नहीं है। हाल में सेबी ने एसआईएफ की नई कैटेगरी शुरू की थी। क्वांट इक्विटी लॉन्ग-शॉर्ट फंड (क्यूएसआईएफ) इस कैटेगरी का इंडिया का पहला फंड है। यह इनवेस्टमेंट के लिए हेज-फंड स्टाइल की स्ट्रेटेजी का इस्तेमाल करता है। इसका मतलब है कि यह एक ही समय में लॉन्ग पोजीशन और शॉर्ट पोजीशन या इसके ऑपोजिट पोजीशन लेने की इजाजत देता है। यह म्यूचुअल फंड के फ्रेमवर्क के तहत आता है। इसका मतलब है कि इस पर रेगुलेटर की नजर रहती है। यह इनवेस्टर्स के हितों की सुरक्षा का भी ध्यान रखता है। उतारचढ़ाव वाले बाजार में शॉर्टिंग से मुनाफा कमाने की गुंजाइश होती है। क्वांट म्यूचुअल फंड के फाउंडर और सीआईओ संदीप टंडन ने कहा, रअगर आपके पास स्ट्रॉन्ग रिसर्च है, अच्छा एनालिटिक्स है और सॉलिड माइक्रो व्यू है तो शॉर्टिंग से आप मार्केट में दोनों तरह की स्थितियों में पैसे कमा सकते हैं। आपको स्टॉक के चढ़ने का इंतजार नहीं करना पड़ेगा। गिरते स्टॉक्स से मुनाफा कमाना सेबी के फ्रेमवर्क के तहत लीगल है। यह उन इनवेस्टर्स के लिए अहम टूल है जो इसके इस्तेमाल का तरीका जानते हैं।

यह किस स्ट्रेटेजी का इस्तेमाल करता है

यह फंड लॉन्ग-शॉर्ट स्ट्रेटेजी का इस्तेमाल करता है। यह ऐसे स्टॉक्स को खरीदता है, जिनकी कीमतें चढ़ने की उम्मीद होती है और साथ ही उन स्टॉक्स को शॉर्ट करता है जिनकी कीमतें गिरने के आसार होते हैं। इस स्ट्रेटेजी की वजह से मार्केट किसी भी दिशा में जाए इनवेस्टर्स को मुनाफा होता है। गिरने वाले और चढ़ने वाले शेयरों की पहचान फंड मैनेजर करता है। इसके लिए फंडामेंटल और टेक्निकल एनालिसिस का इस्तेमाल होता है।

टैक्स के कौन से नियम लागू होते हैं

टैक्स के मामले में एसआईएफ पर म्यूचुअल फंड्स के नियम लागू होते हैं। इस वजह से यह एआईएफ या पीएमएस के मुकाबले ज्यादा फायदेमंद हो जाता है। सहजमनी के फाउंडर और चीफ इनवेस्टमेंट एडवाइजर अभिषेक कुमार ने कहा, क्यूएसआईएफ जैसे इक्विटी ओरिएंटेड एसआईएफ के शॉर्ट टर्म गेंस पर 20 फीसदी टैक्स लगता है, जबकि लॉन्ग टर्म गेंस पर 12.5 फीसदी टैक्स लगता है। एक वित्त वर्ष में 1.25 लाख रुपये का गेंस टैक्स-फ्री है।

न्यूनतम इनवेस्टमेंट कितना है

एसआईएफ में कम से कम 10 लाख रुपये का निवेश जरूरी है। यह पीएमएस में न्यूनतम 50 लाख रुपये और एआईएफ में न्यूनतम 1 करोड़ रुपये के निवश के मुकाबले कम है। सैंक्टम वेल्थ में इनवेस्टमेंट प्रोडक्ट्स के हेड अलख यादव ने कहा कि न्यूनतम निवेश कम होने से यह ज्यादा इनवेस्टर्स के दायरे में आ जाता है। इसके अलावा चूंकि यह सेबी के नियम और कानून के तहत ऑपरेट होता है, जिससे इस पर रेगुलेटर की नजर बनी रहती है। इससे इनवेस्टर्स के हितों की सुरक्षा होती है।

क्या आपको इनवेस्ट करना चाहिए?

एसआईएफ का इस्तेमाल इनवेस्टर को अपने सैटेलाइट पोर्टफोलियो की तरह करना चाहिए न कि कोर पोर्टफोलियो के एक हिस्से के रूप में। अगर कोई स्मार्ट इवेस्टर रिस्क और रिटर्न को बैलेंस करना चाहता है तो वह कुछ पैसा एसआईएफ में लगा सकता है। अगर वह 50 रुपये म्यूचुअल फंड में निवेश करना चाहता है तो वह इसमें से 15 रुपये एसआईएफ में लगा सकता है। इसका मतलब है कि म्यूचुअल फंड में कुल निवेश का 30 फीसदी वह एसआईएफ में इनवेस्ट कर सकता है।

क्या है एसआईएफ

स्पेशलाइज्ड इनवेस्टमेंट फंड (एसआईएफ) एक नया निवेश विकल्प है जो म्यूचुअल फंड और पोर्टफोलियो मैनेजमेंट सर्विस (पीएमएस) के बीच का ऑप्शन है। यह निवेशकों को अधिक जोखिम लेने और विभिन्न निवेश रणनीतियों का उपयोग करने की अनुमति देता है, जैसे कि लॉन्ग-शॉर्ट फंड। एसआईएफ में निवेश करने के लिए कम से कम 10 लाख की आवश्यकता होती है।

एसआईएफ की विशेषताएं

- लॉन्ग-शॉर्ट फंड : एसआईएफ में निवेशक दोनों तरह के स्टॉक खरीद और बेच सकते हैं, जिससे जोखिम कम करने और बेहतर लाभ पाने का मौका मिलता है।
- अधिक जोखिम : एसआईएफ में निवेश करने वाले निवेशकों को अधिक जोखिम उठाने की आवश्यकता होती है, लेकिन इससे अधिक रिटर्न भी मिल सकता है।
- टैक्स लाभ : एसआईएफ में टैक्स की व्यवस्था म्यूचुअल फंड जैसी ही है, जो निवेशकों के लिए फायदेमंद हो सकती है।

एसआईएफ में निवेश करने के लाभ

- अधिक फ्लेक्सिबिलिटी : एसआईएफ में निवेशक विभिन्न निवेश रणनीतियों का उपयोग कर सकते हैं और अपने निवेश को अधिक फ्लेक्सिबल बना सकते हैं।
- अधिक रिटर्न : एसआईएफ में निवेश करने से अधिक रिटर्न मिल सकता है, लेकिन इसके लिए अधिक जोखिम उठाने की आवश्यकता होती है।

कौन से फंड कर रहे हैं हाउस एसआईएफ लॉन्च

- क्वांट म्यूचुअल फंड : क्वांट म्यूचुअल फंड ने भारत का पहला लॉन्ग-शॉर्ट एसआईएफ फंड लॉन्च करने की मंजूरी प्राप्त की है।
- आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल : आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल भी अपना एसआईएफ फंड लॉन्च करने की तैयारी कर रही है।
- एसबीआई म्यूचुअल फंड : एसबीआई म्यूचुअल फंड भी एसआईएफ फंड लॉन्च करने की तैयारी कर रही है।

- फाइनेंशियल सफलता की पहली सीढ़ी है खर्चों पर रोक लगाना और भविष्य के लिए आय का 20 फीसदी बचाना
- अपने मंथली बिलों व खर्चों को कम कर बचा सकते हैं पैसे
- अपने बचे हुए पैसे को सही जगह निवेश करें, बढ़ेगा पैसा

पैसों का करें बेहतर मैनेजमेंट, नहीं होंगे परेशान

सैलरी को 'दीमक' की तरह खा जाते हैं बिल

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

अक्सर लोगों को लगता है कि फाइनेंशियल रूप से मजबूत या फिर सफलता का मतलब बहुत ज्यादा पैसा कमाना है, लेकिन यह पूरी तरह सच नहीं होता है। असल में फाइनेंशियल सफलता की पहली और सबसे अहम सीढ़ी है अपने खर्चों पर रोक लगाना। जब आप अपने मंथली बिलों और खर्चों को कम करते हैं, तो फिर आपके पास बचत और इन्वेस्टमेंट के लिए अधिक पैसा बचता है। तभी आप अपने पैसे को बढ़ा पाते हैं। असल में यह कोई मुश्किल काम नहीं है, जी हां कुछ आसान और सुनियोजित कदम उठाकर आप अपने मंथली खर्चों को कम कर सकते हैं और एक मजबूत वित्तीय फ्यूचर की नींव रख सकते हैं। इस रिपोर्ट में हम आपको बताने जा रहे हैं ऐसे की कुछ टिप्स जो अपको आर्थिक सफलता की ओर ले जाएंगे।

पहला कदम : अपने खर्चों को पहचानें

सबसे पहले, आपको यह जानना होगा कि आपकी मेहनत की कमाई का पैसा कहां जा रहा है। इसके लिए, आप कम से कम एक महीने तक अपने हर छोटे-बड़े खर्च का हिसाब रखें। अपने सभी खर्चों को एक कॉपी में या मोबाइल ऐप में लिखें। इसमें किराए, किराने का सामान, ईएमआई, बिजली बिल से लेकर एक कप चाय का खर्च भी शामिल करें। यह कदम आपको यह समझने में हेल्प कर सकता है कि आप कहां-कहां फिजूलखर्ची कर रहे हैं।

दूसरा कदम बजट बनाएं

एक बात साफ है कि जब आप अपने खर्चों को पहचान लेंगे, तो अगला कदम होगा एक मासिक बजट बनाना है। अपनी इनकम के हिसाब से हर चीज के लिए एक लिमिट तय करें. बजट बनाने से आपको अपने खर्चों को कंट्रोल करने में मदद मिल सकेगी। अपने खर्चों को दो पार्ट में बांटें।

अहम खर्चे : किराया, ईएमआई, राशन, दवाई आदि।

गैर-जरूरी खर्चे : बाहर खाना, ऑनलाइन शॉपिंग, मनोरंजन आदि।

तीसरा कदम : गैर-जरूरी खर्चों में कटौती

अधिक पैसा बचाने के लिए अपने गैर-जरूरी खर्चों में कटौती करें। इससे आपको हर महीने पैसे बचने लगेंगे। इस पैसे को आप अच्छी जगह पर निवेश करें। धीरे धीरे इस निवेश औश्र अचत को बढ़ाते जाएंग। इससे आपके हाथों में अधिक पैसा आएगा और आपकी बचत बढ़ती जाएगी। आप इन खर्चों में कर सकते हैं कटौती।

मनोरंजन : कई ओटीटी प्लेटफॉर्म्स के सब्सक्रिप्शन लेने के बजाय, केवल एक या दो का ही यूज करें।

खान-पान : बाहर से खाना ऑर्डर करने की जगह, घर पर खाना बनाने की आदत डालें। इससे आपके पैसे और हेल्थ दोनों बचेंगे।

शॉपिंग : अनावश्यक और आवेगपूर्ण खरीदारी से बचें। जब कोई चीज जरूरी हो तभी खरीदें।

चौथा कदम : बड़े बिलों को कम करें

आपको अपनी बचत बढ़ाने के लिए अपने सबसे बड़े मासिक बिलों को कम करने के तरीके खोजने होंगे या कमाई को बढ़ाना होगा। कोई भी पार्टटाइम काम करें। फीलॉन्सिंग भी कर सकते हैं। इससे आपको पैसे बचेंगे। बिजली का बिल ज्यादा है। गैर जरूरी उपकरणों को बंद कर दें। घर लाइट उतनी ही जलाएं, जितनी जरूरत हो। कुछ बिलों में ऐसे कर सकते हैं कटौती।

बिजली बिल : घर में एलईडी लाइट का यूज करें, पुराने और ज्यादा बिजली खाने वाले उपकरणों को बदलें और जरूरत न होने पर पंखे, एसी और लाइट बंद करें।

फोन और इंटरनेट : अपने फोन और इंटरनेट प्लान की तुलना करें। कई बार, कंपनियां बेहतर ऑफर दे रही होती हैं, जिनसे आपका बिल कम हो सकता है।

लोन की ईएमआई : अगर आपके पास पुराना लोन है, तो उसकी ब्याज दर को कम करने के लिए बैंकों से बात करें।

पांचवां कदम : बचत को प्राथमिकता दें

अपने मंथली खर्चों को कम करने के बाद, जो भी पैसा बचे उसे तुरंत बचत और इन्वेस्टमेंट में लगाएं। 'खुद को पहले भुगतान करें' के रूल को अपनाएं। इसका मतलब है कि सैलरी आने पर सबसे पहले बचत और इन्वेस्टमेंट के लिए पैसा निकालें, फिर बाकी बचे पैसों से खर्च करें। इससे साफ है कि मंथली बिलों को कम करना एक आदत है, जिसे लगातार कोशिश से अपनाया जा सकता है। यह कोई बड़ा काम नहीं होता है, बल्कि छोटे-छोटे कदमों का एक बड़ा रूप होता है। इन कुछ कदमों को उठाकर आप ना केवल अपने मंथली खर्चों को कम कर सकते हैं, बल्कि अपने वित्तीय लक्ष्यों को भी हासिल कर सकते हैं और एक सेफ फ्यूचर की नींव रख सकते हैं।

स्टूडेंट लाइफ में फाइनेंशियल मैनेजमेंट घटा सकता है परेशानी, बजट बनाकर फ्यूचर प्लानिंग भी छात्रों के लिए बेहतर

इन्हें अपनाने से कम पैसों में भी जी सकते हैं बॉस वाली जिंदगी

स्टूडेंट लाइफ में करें मनी मैनेजमेंट,भविष्य में धन की नहीं रहेगी कमी, अमीर बनने के लिए हर छात्र कुछ अहम टिप्स को अपनाएं

प्लानिंग
बिजनेस डेस्क

स्टूडेंट लाइफ में सेविंग्स की आदत डालना फ्यूचर के लिए सबसे मजबूत नींव हो सकती है। सेविंग्स को कमी भी जो बचेगा, वही बचाऊंगा की सोच से ना देखें, बल्कि इसे अपनी प्रायोरिटी बनाएं। छोटे-बड़े बचत लक्ष्य तय करें। जब कोई टारगेट तय होता है तो बचत करना आसान और प्रेरणादायक लगता है। हमेशा ट्राई करें कि आपकी आय का 10% या 20% हिस्सा सीधे बचत खाते में डालें।

विद्यार्थी लाइफ अक्सर उत्साह, सीखने और नए अनुभवों से भरा होती है, लेकिन इसी दौरान पैसों का मैनेजमेंट बहुत बड़ी चुनौती भी साबित हो सकता है। कॉलेज की फीस, किताबों का खर्च, हॉस्टल का किराया, खाना-पीना, और मनोरंजन के खर्चे इन सभी को मैनेज करना कभी बार मुश्किल हो जाता है, लेकिन अगर स्टूडेंट टाइम में ही बजट बनाना और पैसों का सही मैनेजमेंट सीख लिया जाए तो फ्यूचर आर्थिक परेशानियों से बच सकते हैं। इसलिए जरूरी है कि छात्रों को शुरू से ही मनी मैनेजमेंट पर ध्यान देना चाहिए ताकि भविष्य की दिक्कतों से दूर रहा जा सके और छात्र आसानी से धनवान बन सकें। अच्छी फाइनेंशियल आदतें न केवल आपको कर्ज के जाल में फंसने से बचाती हैं, बल्कि आपको अपने टारगेट को प्राप्त करने में भी मदद करती हैं। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे ऐसे ही कुछ टिप्स जो आपको धनवान बना सकते हैं।

अपनी इनकम को ट्रैक करें

हर छात्र को अपने फाइनेंशियल लाइफ की शुरुआत सबसे पहले अपनी इनकम और खर्चों को ट्रैक करना चाहिए। चाहे पॉकेट मनी हो, स्कॉलरशिप या पार्ट-टाइम जॉब की आमदनी हो, सबका हिसाब रखना जरूरी होता है। इसके लिए आप एक छोटी डायरी, कोई बजटिंग ऐप या एक्सेल शीट का सहारा ले सकते हैं। स्टूडेंट रोजमर्रा के छोटे-छोटे खर्च जैसे स्नैक्स, ऑटो किराया या ऑनलाइन सब्सक्रिप्शन को भी मेंशन करें। यह आदत आपको अपनी फिजूलखर्ची समझने और उसे नियंत्रित करने में मदद करेगी, जिससे पैसों की बचत हो सकेगी।

आवश्यकताओं और इच्छाओं में अंतर समझें

अपने खर्चों को दो पार्ट में बांटें-स्टूडेंट लाइफ में आर्थिक समझ को समझना बेहद जरूरी है, और इसकी शुरुआत होती है 'आवश्यकताओं' और 'इच्छाओं' के फर्क को समझने से। आवश्यकताएं वो खर्चे होते हैं जो लाइफ के लिए जरूरी हैं-जैसे ट्यूशन फीस, किताबें, रूम रेंट, खाना और आना-जाना, जबकि, इच्छाएं वो चीजें हैं जो केवल सुख-सुविधा के लिए होती हैं, जैसे बाहर खाना, फिल्म देखना या नया गैजेट खरीदना, तो जब आप इन दोनों के बीच फर्क पहचान लेंगे, तो आप अपनी जरूरत पर फोकस करके जरूरी खर्चों पर लगाम लगाकर बेहतर फाइनेंशियल कंट्रोल बना सकते हैं।

50/30/20 का बजट बनाएं

अपनी इनकम और खर्चों को समझने के बाद अगला जरूरी कदम है एक सही मंथली बजट बनाया जाए। आप अपनी मासिक आय के अनुसार भोजन, कन्वेंशन, पढ़ाई की चीजें और मनोरंजन जैसी लिस्ट के लिए अलग-अलग पैसे तय करें। यह ध्यान रखें कि आपके कुल खर्च आपकी कुल आमदनी से अधिक ना हों। बजट बनाने के लिए आप 50/30/20 रूल का पालन कर सकते हैं, जैसे 50% राशि आवश्यकताओं पर, 30% इच्छाओं पर और 20% सेविंग्स या किसी भी लोन की चुकौती के लिए रखें।

स्मार्ट खरीदारी करें और रियायतों का लाभ उठाएं

पैसों की बचत के लिए रियायतों और डील्स का समझदारी से यूज करना बेहद फायदेमंद हो सकता है। जहां तक हो हमेशा अपने स्टूडेंट आईडी कार्ड को साथ रखें और **wherever possible** उसे दिखाकर छूट पाने की कोशिश कर सकते हैं। आप किराने का सामान थोक में खरीदें और ऑफर्स या सेल पर नजर रखना चाहिए, इतना ही नहीं महंगे ब्रांड्स की बजाय सामान्य ब्रांड चुनना अधिक बजट-फ्रेंडली होता है।

एक्स्ट्रा इनकम के ऑप्शन खोजें

अगर आपका बजट लिमिटेड है तो खर्चों पर नियंत्रण के साथ-साथ इनकम बढ़ाने के ऑप्शन ढूंढें। आप पार्ट-टाइम जॉब जैसे ट्यूटरिंग, कैंपस असिस्टेंटशिप या फ्रीलांसिंग का ऑप्शन चुन सकते हैं। साथ ही आपकी हॉबी भी कमाई का जरिया बन सकती है—जैसे ऑनलाइन कंटेंट बनाना, हैंडमेड क्राफ्ट्स बेचना या ब्लॉगिंग करना।

इमरजेंसी फंड बनाएं

अचानक आने वाले खर्चों के लिए हमेशा तैयार रहना बहुत जरूरी है, क्योंकि मेडिकल इमरजेंसी, लैपटॉप खराब होना या कोई भी अचानक से कोई भी खर्चे सामने आ सकते हैं। इसके लिए आप एक अलग बचत खाता खोलकर उसमें धीरे-धीरे थोड़ी-थोड़ी राशि जमा करें। ऐसा करने से आपको महंगे पर्सनल लोन या क्रेडिट कार्ड का सहारा लेने की जरूरत नहीं पड़ेगी। छात्र बजट बनाना, खर्चों की प्राथमिकता तय करना और हर महीने की सेविंग्स तय करना सीखकर फाइनेंशियल मैनेजमेंट की शुरुआत कर सकते हैं।

खबर संक्षेप

पवन जिंदल को किया क्लब का प्रधान नियुक्त

गन्नौर। गन्नौर में रोटरी क्लब ऑफ गन्नौर सेंट्रल का भव्य अधिष्ठापन समारोह संपन्न हुआ। रोटरी इंटरनेशनल डिस्ट्रिक्ट 3011 की डिस्ट्रिक्ट गवर्नर अमिता महेंद्रू ने औपचारिक रूप से पवन जिंदल को रोटरी कॉलर पहनाकर क्लब का प्रधान नियुक्त किया। नवनियुक्त प्रधान पवन जिंदल ने कहा कि रोटरी सेवा और समर्पण का प्रतीक है, और आने वाले कार्यकाल में वे अपने अनुभव और प्रयासों से क्लब को नई दिशा देंगे। क्लब की सदस्यता में 20 नए सदस्यों को जोड़ा गया है। इन नए सदस्यों में अंगद त्यागी, रिंकल कमरा, अनिल कौशिक, नवीन गौतम, रेणु जैन, रोहित कुमार, कुलभूषण त्यागी, प्रीतम आहूजा, अमरीश त्यागी, अरुण बंसल, अखिल जैन, नवीन मित्तल, तुषार चौधरी, विकास अग्रवाल, शिवम गोयल, कमल जैन सहित कई अन्य शामिल रहे। वरिष्ठ सदस्यों ने सभी नए सदस्यों का पुष्पगुच्छ-तालियों की गड़गड़ाहट से स्वागत किया।

राखी निर्माण प्रतियोगिता का आयोजन किया

खरखौदा। लखीराम मेमोरियल सीनियर सेकेंडरी स्कूल, हलालपुर में रक्षाबंधन के पावन पर्व के उपलक्ष्य में प्री-प्राइमरी कक्षाओं के लिए रंग भराई (कलरिंग) प्रतियोगिता तथा समस्त कक्षाओं के लिए राखी निर्माण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। छोटे- छोटे बच्चों ने रंग-बिरंगी और आकर्षक राखियां बनाकर अपनी रचनात्मकता का परिचय दिया। छात्राओं का विद्यालय के प्राचार्य संजय कुमार को स्वयं निर्मित राखियां बांधा जाना आकर्षण का केन्द्र रहा। प्राचार्य ने बच्चों को आशीर्वाद दिया तथा उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। कहा कि ऐसे आयोजनों से बच्चों में भारतीय संस्कृति के प्रति सम्मान और समझ विकसित होती है। पूरे विद्यालय परिसर में उत्सव जैसा वातावरण रहा और छात्र-छात्राओं ने पूरे जोश और उमंग से भाग लिया।

ब्लॉक स्तरीय खेलों में प्रताप स्कूल के खिलाड़ियों का शानदार प्रदर्शन

कबड्डी में अंडर-17, 19 वर्ग में प्रताप स्कूल की टीम ने पाया अव्वल स्थान

हरिभूमि न्यूज ▶▶| खरखौदा

विजेता खिलाड़ियों का जिला स्तरीय प्रतियोगिताओं के लिए किया चयन

ब्लॉक स्तरीय खेल प्रतियोगिताओं में प्रताप स्कूल के खिलाड़ियों ने दमदार प्रदर्शन करते हुए एक बार फिर अपना वर्चस्व साबित किया। विभिन्न खेलों में शानदार उपलब्धियों के दम पर विद्यालय ने स्वर्ण पदकों की झड़ी लगा दी। कबड्डी में अंडर-17, 19 वर्ग में प्रताप स्कूल की टीम ने शानदार जीत दर्ज कर पहला स्थान, कुश्ती में पहलवानों ने 28 स्वर्ण व 11 रजत पदक, ताइक्वांडो में 17 स्वर्ण व 4 रजत, एथलेटिक्स में 13 स्वर्ण व 7 रजत, बॉक्सिंग में 27 स्वर्ण व 6 रजत पदक अपने नाम किए। योग में पाँच खिलाड़ियों ने प्रथम स्थान प्राप्त कर विद्यालय का नाम रोशन किया।

सभी स्वर्ण पदक विजेता खिलाड़ियों का चयन जिला स्तरीय प्रतियोगिताओं के लिए किया गया है। विद्यालय प्रांगण में विजेताओं के सम्मान में भव्य समारोह आयोजित किया गया, जिसमें द्रोणाचार्य अवार्डी ओमप्रकाश दहिया, प्राचार्य दया दहिया और अकादमिक डायरेक्टर डॉ. सुबोध दहिया ने खिलाड़ियों को फूलमालाएं पहनाकर उनका उत्साह बढ़ाया।

खरखौदा। बॉक्सरों को प्रोत्साहित करते प्राचार्या दया दहिया। फोटो :हरिभूमि

गोहाना। पदक विजेता पहलवान जीते गए पदकों के साथ। फोटो : हरिभूमि

कुश्ती अकादमी कासंडी के पहलवानों ने जीते 12 पदक

गोहाना। शैक्षणिक खंड गोहाना की खंड स्तरीय कुश्ती प्रतियोगिताओं में कुश्ती अकादमी कासंडी के पहलवानों ने 7 स्वर्ण सहित 12 पदक जीत कर अपनी ताकत का जलवा दिखाया। खंड स्तरीय कुश्ती प्रतियोगिताएं गांव मैंसवाल कलां में सम्पन्न हुई। पदक विजेताओं को अकादमी में समारोहपूर्वक सम्मानित करके उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की गई। कुश्ती प्रतियोगिता में प्रतीक पुत्र देवेंद्र ने 35 किलोग्राम भारवर्ग में स्वर्ण पदक, लव पुत्र जय भगवान ने 45 किलोग्राम ग्रीको रोमन कुश्ती प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक, दक्ष पुत्र मनोज ने 48 किलोग्राम ग्रीको रोमन कुश्ती प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक, प्रतीक वर्मा पुत्र राजेश ने 52 किलोग्राम भारवर्ग में स्वर्ण पदक, दिव्यांशु पुत्र जसबीर ने 57 किलोग्राम ग्रीको रोमन कुश्ती में स्वर्ण पदक, अंकित पुत्र कृष्ण ने 60 किलोग्राम भारवर्ग में स्वर्ण पदक और आर्यन पुत्र राकेश ने 62 किलोग्राम भारवर्ग में स्वर्ण पदक अपने नाम किया। विनीत पुत्र संदीप, यशवंत पुत्र सतीश कुमार और जतिन पुत्र सुमित ने रजत पदक हासिल किए। महिला खिलाड़ियों में मीनाक्षी पुत्री नवीन और रितु पुत्री विनोद ने भी प्रथम स्थान प्राप्त करके स्वर्ण पदक हासिल किए। मार्गदर्शन अंतर्राष्ट्रीय कोच सुभाष चंद्र का रहा। विजेताओं को सरपंच संदीप सतपाल आर्य ने खिलाड़ियों को आशीर्वाद दिया।

सोनीपत। कार्यक्रम के दौरान वृद्धाश्रम में बुजुर्गों को जानकारी देते हुए साथ में आश्रम संचालक आनंद कुमार एवं अन्य। फोटो :हरिभूमि

वरिष्ठ नागरिकों को दी योजनाओं की जानकारी

■ विश्व वरिष्ठ नागरिक दिवस के मौके पर कार्यक्रम का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

जिला विधिक सेवाएं प्राधिकरण की ओर से विश्व वरिष्ठ नागरिक दिवस के उपलक्ष्य में सूरी पेट्रोल पंप वाली गली स्थित वृद्ध आश्रम व संत गरीबदास वृद्ध आश्रम में जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में वरिष्ठ नागरिकों को विभिन्न योजना के प्रति जागरूक किया गया। पैनल अधिवक्ता अरुण कुमार शर्मा, विक्रम सैनी व जिला समाज कल्याण अधिकारी जैकी राजा ने बुजुर्गों को जागरूक किया।

जैकी राजा ने वृद्धावस्था, विधवा पेंशन, अरुण कुमार शर्मा ने वरिष्ठ नागरिकों के अधिकारों, मुफ्त कानूनी सहायता के बारे में अवगत कराया। उन्होंने बताया कि हरियाणा राज्य विधिक सेवाएं प्राधिकरण की ओर से अगस्त माह में जागरूकता अभियान की शुरुआत की गई है। अभियान का उद्देश्य वरिष्ठ नागरिकों को अधिक से अधिक कानूनी सहायता प्रदान करना है। अलग-अलग दिन नागरिक अस्पताल, बस अड्डा, रेलवे स्टेशन व लघु सचिवालय में हेल्प डेस्क भी लगाया जा रहा है। यहां वरिष्ठ नागरिक अपनी समस्याओं को लेकर पैनल अधिवक्ताओं से मिल सकते हैं। जिला विधिक सेवाएं प्राधिकरण के सचिव प्रचेता सिंह ने बताया कि सोमवार से शनिवार तक कार्यालय या नालसा हेल्पलाइन नंबर 15100 पर फोन करके मुक्त कानूनी सहायता प्राप्त की जा सकती है। न्यायालय परिसर में 13 सितंबर को राष्ट्रीय लोक अदालत लगाकर लंबित मुकदमों का निपटान किया जाएगा। वृद्ध आश्रम के प्रभारी आनंद, संत गरीबदास वृद्ध आश्रम के प्रभारी ओमप्रकाश दहिया मौजूद रहे।

धवन का 67 किलोग्राम ग्रीको रोमन कुश्ती में ब्लॉक स्तर पर प्रथम स्थान

प्रधानाचार्या ने छात्रों को बधाई देते उज्जवल भविष्य की कामना की

हरिभूमि न्यूज ▶▶| गन्नौर

अपोलो इंटरनेशनल स्कूल बड़ी/" के छात्रों का विभिन्न खेलों में चयन हुआ है। कक्षा बारहवीं के छात्र धवन का 67 किलोग्राम ग्रीकों रोमन कुश्ती ब्लॉक स्तर पर प्रथम स्थान हासिल करके जिला स्तरय पर चयन हुआ। देवराज कक्षा छठी अंडर -14 'ताईकमांडो लड़कों के वर्ग' में द्वितीय स्थान प्राप्त करके ब्लॉक स्तर पर विद्यालय का नाम रोशन किया और साथ में दसवीं कक्षा के छात्र हितेन ने अंडर- 17 (200) मीटर रेस (दौड़) में द्वितीय स्थान प्राप्त करके जिला स्तरीय चयन अंडर- 17 क्रिकेट में युवराज 'का चयन जिला स्तरीय पर कराकर विद्यालय को गौरवान्वित किया। स्कूल की प्रधानाचार्या अनीता यादव व शिक्षकों ने भी छात्रों को बधाई देते उज्जवल भविष्य की कामना की।

स्कूल की प्रधानाचार्या अनीता यादव छात्र धवन को बधाई देते।

वार्ड की सभी गलियों में सीवर पाइप लाइन डलवाना ही मुख्य प्राथमिकता : पुनीत राई

हरिभूमि न्यूज ▶▶| राई

नगर निगम वार्ड-8 की सभी गलियों में पानी निकासी की समस्या को स्थायी रूप से दूर करने के लिए सीवर पाइपलाइन बिछाने का कार्य युद्धस्तर पर चल रहा है। स्थानीय पार्षद पुनीत राई ने शुक्रवार को वार्ड में चल रहे विभिन्न विकास कार्यों का निरीक्षण किया और संबंधित विभाग के अधिकारियों व ठेकेदारों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान पार्षद पुनीत राई ने कहा कि सीवर पाइपलाइन बिछाना उनकी शीर्ष प्राथमिकताओं में शामिल है, ताकि बरसात के दौरान गलियों में पानी भराव की समस्या खत्म हो सके। तैयार होने के बाद वार्ड की हर गली में पानी निकासी की व्यवस्था सुचारू हो जाएगी और लोगों को लंबे समय से हो रही असुविधा से राहत मिलेगी। राई गांव में दबाई जा रही सीवर पाइपलाइन का जायजा लेते हुए उन्होंने ठेकेदार को तय समय सीमा में गुणवत्तापूर्ण कार्य पूरा करने के निर्देश दिए।

उन्होंने कहा कि विकास कार्यों में किसी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी और मानक के अनुरूप ही कार्य होना चाहिए। इस अवसर पर राकेश त्यागी, अमरीश त्यागी, राकेश कौशिक, प्रतीक, दीप कौशिक, अनिल, विक्की कौशिक, जोगिंदर पांचाल व मोनू आदि मौजूद रहे।

राई। विकास कार्यों का निरीक्षण करते पार्षद पुनीत राई व अन्य।

ईमानदारी से काम करने के लिए प्रेरित किया

ब्राइट स्कॉलर स्कूल में करियर काउन्सलिंग कार्यशाला

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

ब्राइट स्कॉलर स्कूल में भारतीय वायु सेना में 14 वर्षों के अनुभव वाले विमान इंजीनियर स्क्वाड्रन लीडर गीतांजलि सिंह द्वारा ग्यारहवीं और बारहवीं के छात्रों के लिए एक करियर परामर्श सत्र आयोजित किया गया। उन्होंने अपनी प्रेरक सफलता की कहानी साझा की, जिसमें स्पष्ट दृष्टि रखने, लक्ष्य निर्धारित करने और जीवन में मजबूत बैक-अप योजनाओं को बनाए रखने के महत्व पर ज़ोर दिया गया। उनके शब्दों ने छात्रों को प्रेरणा, आकांक्षा और अनुशासन को पोषित करने के लिए प्रोत्साहित किया, और उन्हें याद दिलाया कि जीवन में कुछ भी मुफ्त नहीं मिलता सब कुछ कड़ी मेहनत, प्रतिबद्धता और अटूट समर्पण से अर्जित किया जाना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि महिलाएं आज हर क्षेत्र में आगे जा रही है, किसी भी क्षेत्र में वो पीछे नहीं है। सत्र का समापन शैक्षणिक निदेशक द्वारा हार्दिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। प्रधानाचार्य डॉ. किरण दलाल ने भी छात्रों को एक स्पष्ट दृष्टि विकसित करने और अपने लक्ष्यों के प्रति पूर्ण ध्यान और ईमानदारी से काम करने के लिए प्रेरित किया।

कार्यशाला के दौरान गीतांजलि सिंह के साथ विद्यालय स्टाफ, विद्यार्थी एवं अन्य।

सोनीपत। कार्यक्रम के दौरान बालकों को दीक्षा ग्रहण करवाते हुए।

आठ ने ग्रहण की ब्रह्मचर्य की दीक्षा

सोनीपत। आर्य समाज सेक्टर-15 स्थित आर्योदय गुरुकुल में रविवार को श्रावणी पर्व धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर छह बालकों – आरव, धनंजय, मेघव, अरुण, कौशिक और सचिन – ने ब्रह्मचर्य की दीक्षा ग्रहण की। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य धर्मवीर मुमुक्षु ने लगभग पचास कन्याओं और युवाओं को यज्ञोपवीत संस्कार कराए। कार्यक्रम के दौरान आर्यवीर दल के शिक्षक करण, डिम्पल और उत्तम का कर्णवेध संस्कार भी संपन्न हुआ। गुरुकुल के आचार्य संदीप श्रेयार्थी ने वैदिक सनातनी परंपरा की रक्षा में अनुशासन, तपस्या और ब्रह्मचर्य के महत्व पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर जगदीश कुकरेजा, रवीन्द्र आर्य और दीपक आर्य ने सभी को शुभकामनाएं दीं। अंत में शांति पाठ और प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

दून पब्लिक स्कूल के मुक्केबाजों ने दो प्रतियोगिताओं में आठ पदक जीते

■ सीबीएसई नॉर्थ जोन और खंड स्तरीय मुक्केबाजी प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| गोहाना

गोहाना-पानीपत मार्ग स्थित दून पब्लिक स्कूल के मुक्केबाजों ने मुक्केबाजी की दो प्रतियोगिताओं में 8 पदक जीत कर अपने मुक्के का दम दिखाया। शनिवार को स्कूल में पदक विजेता खिलाड़ियों को सम्मानित किया। सम्मान समारोह की अध्यक्षता स्कूल के प्रबंधक राजेश कुमार ने की जबकि संयोजन प्राचार्या ज्योति छाबड़ा ने किया। गुरुग्राम के आरबीएमएस पब्लिक स्कूल में 1 से 4 अगस्त तक सीबीएसई नॉर्थ जोन-2 मुक्केबाजी प्रतियोगता आयोजित हुई। प्रतियोगिता में दून पब्लिक स्कूल के मुक्केबाज प्रीति ने रजत पदक और लविश ने कांस्य पदक जीत लिया। इस उत्कृष्ट प्रदर्शन के आधार पर प्रीति का चयन 7 से 13 अगस्त तक ग्रेटर नोएडा में आयोजित होने वाली राष्ट्रीय सब जूनियर मुक्केबाजी प्रतियोगिता के लिए कर लिया गया। दूसरी तरफ स्कूल के मुक्केबाजों ने शैक्षणिक खंड मुंडलाना की खंड स्तरीय खेलों में मुक्केबाजी प्रतियोगिता में भी अपने मुक्के की धाक जमाई।

गोहाना। दून स्कूल के पदक विजेता मुक्केबाज अपने गुरुजनों के साथ। फोटो : हरिभूमि

कार्यक्रम | राज्य नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो के पुनर्वास प्रभारी उप निरीक्षक ने किया जागरूक

यदि नशा अच्छा होता तो मां खुद इसे खाने व पिता पीने के लिए कहता: डॉ. अशोक वर्मा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

हरियाणा राज्य नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो के पुनर्वास प्रभारी उप निरीक्षक डॉ. अशोक कुमार वर्मा ने पुलिस अधीक्षक मोहित हांडा, पंखुड़ी कुमार के नेतृत्व में युवाओं को नशे के विरुद्ध जागरूक किया। उन्होंने मुरथल स्थित चालक प्रशिक्षण केंद्र में 52वें जागरूकता कार्यक्रम के दौरान युवाओं को नशे से दूर रहने की शपथ दिलाई। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रशिक्षण केंद्र के अधिकारी बलविंद्र ने की, चालक प्रशिक्षुओं व कर्मचारी मौजूद रहे। उप निरीक्षक डॉ. अशोक कुमार ने बताया कि सरकार की ओर से एनसीबी का गठन केवल नशा मुक्त ड्रग फ्री हरियाणा के उद्देश्य से किया है। इस वर्ष जनवरी से जून तक 1858 अभियोग अंकित करके 3051 अपराधियों को कारागार में भेजा गया है।

नशा तस्करी में संलिप्त 87 लाख की संपत्ति भी जब्त की गई है। उन्होंने बताया कि नशे को केवल जागरूकता से ही खत्म किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि यदि नशा अच्छा होता तो मां खुद इसे खाने व पिता पीने के लिए कहता।

सोनीपत। नशे के खिलाफ शपथ दिलाते डॉ. अशोक कुमार वर्मा साथ में अन्य। फोटो :हरिभूमि

अल्का विज को प्रिंसिपल अवार्ड

सोनीपत। नेशनल एजुकेशन कॉन्क्लेव 2025 में, थ्यागराज स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स के मंच पर, शिवा शिक्षा सदन, सोनीपत की प्राचार्या अल्का विज को प्रिंसिपल ऑफ़ द ईयर के राष्ट्रीय सम्मान से अलंकृत किया गया। यह सम्मान उनके असाधारण नेतृत्व, दूरदर्शी शैक्षिक दृष्टिकोण और विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु किए गए अमूल्य योगदान का प्रतीक है।

सोनीपत। अल्का विज सम्मान प्राप्त करते हुए। फोटो :हरिभूमि

जाट आरक्षण के चलाया जाएगा जन जागरण अभियान

गोहाना। प्रदेश में जाट आरक्षण के लिए जनजागरण अभियान चलाया जाएगा। शनिवार को अखिल भारतीय जाट आरक्षण संघर्ष समिति की जिला इकाई द्वारा गोहाना के सेक्टर सात स्थित सामुदायिक भवन में बैठक की गई। समिति द्वारा निर्णय लिया गया कि रोहतक के जसिया गांव स्थित चौ. छोटूराम धाम से 24 अगस्त से भाईचारा यात्रा प्रारंभ की जाएगी, जो इसी स्थल पर छह सितंबर को खत्म होगी। यात्रा प्रदेश के सभी 90 विधानसभा क्षेत्रों को दस्तक देगी। समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रताप सिंह दहिया ने कहा कि जाट आरक्षण की मांग केवल हरियाणा में राज्य सरकार ही नहीं बल्कि केंद्र सरकार से भी है। कहा कि जाट समाज लगातार पिछड़ रहा है। भविष्य में और गर्त से बचने के लिए आरक्षण आवश्यक है। उन्होंने भाईचारा यात्रा में सभी बिरादरियों को साथ लेकर चलने, अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने और छोटूराम धाम के महत्व को जन-जन तक पहुंचाने का आह्वान किया।

रक्षाबंधन पर्व पर बाजार में रही भीड़, सड़कों पर जाम

बहनों ने भाइयों की कलाई पर बांधा रक्षा सूत्र

सोनीपत। जिला कारागार में रक्षाबंधन मनाती बहनें और उनके भाई।

सोनीपत। आर्य नगर में भाई आयुष को राखी बांधती बहन हिमांशी।

सोनीपत। छोटू राम चौक निवासी आर्यन दहिया, आयुष्मान, सचिन, रुद्रांश ने बहन मुस्कान, साक्षी, क्रिशवी, अनायशा से बंधवाई राखी।

बंदी-कैदियों की कलाई पर भी बंधा रखा सूत्र

जिला कारागार में भी रक्षाबंधन का पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। जेल में बंद बंदियों और कैदियों की कलाई पर भी रक्षा सूत्र बंधा। इसके लिए जेल प्रशासन की ओर से व्यवस्था की गई थी। हालांकि बहनों को वर्षा के कारण परेशानी का सामना करना पड़ा। तेज वर्षा और जलभराव के बावजूद बहनें अपने बंदी भाईयों को राखी बांधने पहुंचीं। जेल प्रशासन ने इसके लिए खास व्यवस्था की थी, जिसमें राखी, मिठाई और तिलक की थालियां उपलब्ध थीं। बहनों ने पानी में खड़े होकर भी अपने भाईयों की कलाई पर राखी बांधी और उनके सुखद भविष्य की कामना की।

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

सावन माह के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा तिथि पर शनिवार को भाई-बहन के अटूट स्नेह का प्रतीक रक्षाबंधन पर्व मनाया गया। भाई-बहन के अटूट प्रेम का प्रतीक रक्षाबंधन पर्व रीति-रिवाज के साथ मनाया गया। बहनें भाईयों की कलाई पर स्नेह की डोर बांधकर उनकी लंबी उम्र और खुशहाली की कामना की। वहीं, भाईयों ने बहनों को उपहार देकर आजीवन रक्षा करने का वचन दिया। दूसरी ओर बहनों को भाईयों के घर तक पहुंचाने के लिए रोडवेज की ओर से भी जिले भर में 151 बसें चलाई गई। जिनमें बहनों ने फ्री सफर किया। वहीं, दिल्ली-अंबाला रूट पर भी स्पेशल ट्रेन का परिचालन किया गया। कुछ महिलाएं जहां एक दिन पहले अपने मायके पहुंची तो कई महिलाओं को सुबह बारिश के बीच भाईयों की कलाई पर रक्षासूत्र बांधने के लिए पहुंचना पड़ा।

रक्षाबंधन पूर्व सुबह से हो रही तेज वर्षा के बावजूद बहनों का उत्साह कम नहीं हुआ। कई बहनें जलभराव वाली सड़कों से होकर भी अपने भाईयों के घर पहुंचीं। रेलवे स्टेशन और बस अड्डों पर यात्रियों की भारी भीड़ देखने को मिली। जिन बहनों के भाई दूर थे, उन्होंने डाक, कूरियर या वीडियो काल के जरिए अपनी शुभकामनाएं भेजीं। रक्षाबंधन को लेकर सबसे ज्यादा उत्साहित बच्चे दिखाई दिए। बच्चों के लिए डोरेमोन, छोटा भीम आदि की राखियां बाजार में उपलब्ध थी। बहने भी भाइयों की पसंदीदा राखी लेकर पहुंची। राखी बांधने से पहले बहनों ने तिलक किया और राखी बांधने के बाद मिठाई खिलाई। रक्षाबंधन पर सबसे ज्यादा खुश बच्चे ही नजर आए। कुछ बच्चों ने अपनी कलाई पर कई-कई राखियां बंधवाई। उधर, रक्षाबंधन पर बाजार में भीड़ रही। बहनों ने राखियां, मिठाई और अन्य उपहारों की जमकर खरीददारी की। शहर के कच्चे क्वार्टर क्षेत्र, गोहाना रोड, बहालगढ़ रोड, काठमंडी क्षेत्र और मुरथल रोड, बड़ा बाजार आदि क्षेत्रों में भीड़ लगी रही। सड़कों पर जाम लगा रहा। वाहन चालक जाम में फंसे रहे।

बालग्राम की बेटियों ने विधायक कृष्णा गहलावत को बांधी राखी

राई। विधायक कृष्णा गहलावत ने राई बालग्राम की बेटियों से राखी बंधवाते हुए।

राई। रक्षाबंधन का पावन पर्व भाई-बहन के अटूट रिश्ते, प्रेम और विश्वास का प्रतीक है। इस दिन बहनें अपने भाइयों की कलाई पर राखी बांधकर उनकी लंबी उम्र और सुख-समृद्धि की कामना करती हैं इसी परंपरा और भावनाओं को जीवंत करते हुए राई विधानसभा क्षेत्र की विधायक कृष्णा गहलावत ने राई बालग्राम की बेटियों के साथ रक्षाबंधन का पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया। कार्यक्रम के दौरान बालग्राम की छोटी-बड़ी बेटियों ने विधायक कृष्णा गहलावत को राखी बांधकर उनके स्वस्थ, दीर्घायु और सफल जीवन की मंगलकामनाएं कीं। विधायक ने बालग्राम की बेटियों के लिए मिठाई व अन्य खाद्य सामग्री का वितरण किया । राखी बांधते समय बेटियों की आंखों में स्नेह और अपनत्व का भाव स्पष्ट झलक रहा था। विधायक ने भी इस प्यार भरे रिश्ते का मान रखते हुए बेटियों को आशीर्वाद दिया और मिठाई एवं उपहार भेंट किए। विधायक कृष्णा गहलावत ने अपने संदेश में कहा कि बेटियां हमारे समाज की अमूल्य धरोहर हैं और उनका सम्मान, सुरक्षा व शिक्षा सुनिश्चित करना हर परिवार और समाज का कर्तव्य है। विधायक कृष्णा गहलावत ने भावुक होकर कहा की स्नेह, अपनापन और विश्वास से जुड़े रिश्ते ही जीवन को पूर्ण बनाते हैं। कार्यक्रम में बच्चों ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियां भी दीं।

पूर्व मंत्री व मेयर को बांधी राखी

सोनीपत। मेयर राजीव जैन को रक्षा सूत्र बांधती हुई बहन प्रमोद।

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की संचालिका बहन प्रमोद एवं अनुकुमारी ने रक्षाबंधन के पर्व पर पूर्व कैबिनेट मंत्री कविता जैन एवं नगर निगम मेयर राजीव जैन को रक्षा सूत्र बांधा और आशीर्वाद दिया। बहन प्रमोद ने कहा कि रक्षाबंधन का पर्व हमें उन वचनों में बंधने का संदेश देता है जो धर्म, समाज एवं मानव कल्याण के साथ-साथ आत्म कल्याण के लिए भी आवश्यक है। उन्होंने कहा कि यह पर्व भाई बहन के प्रेम की अटूट डोर के साथ-साथ सभी महिलाओं की रक्षा एवं सम्मान का संकल्प लेने के लिए प्रेरित करता है।

छात्रा सोनिका ने हाथों पर रचाई सबसे सुंदर मेहंदी

गोहाना। प्रतियोगिता में विजेता विद्यार्थी अपने गुरुजनों के साथ।

गोहाना।गांव कटवाल स्थित सरस्वती विद्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में शुक्रवार को फैंसी ड्रैस और राखी बनाने की प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। प्रतियोगिताओं की अध्यक्षता प्राचार्य उधम सिंह ने की। मेहंदी प्रतियोगिता में छात्रा सोनिका ने अपने हाथों पर सबसे सुंदर मेहंदी रचाई। दीपांशी ने दूसरा और प्राची ने तीसरा स्थान हासिल किया। फैंसी ड्रैस प्रतियोगिता में छात्रा अंशिका अव्वल रही। यशस्वी व इकनूर ने दूसरा और अंश व दीक्षा ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। राखी बनाने की प्रतियोगिता में लक्की प्रथम रहे। संयम व वंश ने दूसरा जबकि दीक्षा, कीर्ति व रौनक संयुक्त रूप से तीसरे स्थान पर रहीं।

भाजपा नेता मास्टर सत्यनारायण आंतिल ने विधायक कृष्णा गहलावत से बंधवाई राखी

राई। राई की विधायक कृष्णा गहलावत भाजपा नेता मास्टर सत्यनारायण आंतिल को तिलक करते हुए ।

राई। रक्षाबंधन के पावन पर्व पर भाई-बहन के स्नेह और विश्वास का खूबसूरत उदाहरण पेश करते हुए भाजपा नेता मास्टर सत्यनारायण आंतिल ने राई की विधायक कृष्णा गहलावत से राखी बंधवाई। विधायक ने राखी बांधने के बाद उन्हें दीर्घायु, स्वस्थ एवं सफल जीवन का आशीर्वाद दिया, वहीं मास्टर आंतिल ने भी विधायक की खुशहाली और प्रगति की कामना की। इस मौके पर दोनों ने एक-दूसरे के प्रति सम्मान और स्नेह व्यक्त करते हुए समाज में प्रेम, भाईचारे और संस्कारों को मजबूत बनाने का संदेश दिया।

पूर्व विधायक को प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विवि की बहनों ने बांधी राखी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

सोनीपत से पूर्व विधायक सुरेंद्र पंवार को रक्षाबंधन के पावन पर्व पर प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की विभिन्न शाखाओं से पूज्यनीय बहनों ने सेक्टर-15 स्थित निवास स्थान पर पहुंचकर राखी बांधी। पूर्व विधायक सुरेंद्र पंवार ने बहनों का धन्यवाद करते हुए उनका आशीर्वाद लिया। इस दौरान युवा जिलाध्यक्ष ललित पंवार ने भी बहनो से राखी बंधवाकर बहनो का आशीर्वाद लिया। पूर्व विधायक सुरेंद्र पंवार ने कहा कि रक्षाबंधन का पर्व भाई-बहन के अटूट प्रेम का प्रतीक है। यह त्योहार भाई-बहन को स्नेह की डोर में बांधता है। इस दिन बहन अपने भाई के मस्तक पर टीका लगाकर रक्षा का बन्धन बांधती है। रक्षाबंधन के दिन बहनें भगवान से अपने भाईयों की तरक्की के लिए भगवान से प्रार्थना करती है। उन्होंने कहा कि रक्षाबंधन का त्यौहार हमारी सभ्यता, परम्परा के साथ-साथ भाई-बहन के पवित्र रिश्ते को मजबूत बनाता है।

सोनीपत। पूर्व विधायक सुरेंद्र पंवार को राखी बांधती हुई प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की बहनें।

ब्रह्मकुमारी बहनों ने डीसीपी को बांधी राखी

गोहाना। शनिवार को पुलिस उपायुक्त (डीसीपी) भारती डबास ने ब्रह्मकुमारी संगठन की बहनों के साथ रक्षाबंधन का पर्व मनाया। ब्रह्मकुमारी बहनों ने डीसीपी डबास सहित उपस्थित पुलिस अधिकारियों एवं कर्मियों को राखी बांधकर उनके सुरक्षित, स्वस्थ और सफल जीवन की कामना की। डीसीपी ने कहा कि यह पर्व भाई-बहन के पवित्र रिश्ते के साथ आपसी विश्वास, सम्मान और एकता का प्रतीक है। समाज में शांति, सौहार्द और भाईचारे की भावना को बनाए रखना हम सभी की जिम्मेदारी है। इस अवसर पर गोहाना पुलिस के अधिकारी व कर्मचारी मौजूद रहे। कार्यक्रम के अंत में आपसी भाईचारे और सामुदायिक सहयोग की भावना को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया।

राखी प्रतियोगिता में छात्रों ने दिखाया हुनर

हरिभूमि न्यूज ▶▶| गोहाना

महम रोड पर गुढ़ा चुंगी के समीप स्थित जेकेआर पब्लिक स्कूल गोहाना में कक्षा तीसरी से कक्षा 12वीं तक के विद्यार्थियों के मध्य राखी बनाने की प्रतियोगिता करवाई गई। प्रतियोगिता में प्रतिभागी विद्यार्थियों ने रंग-बिरंगी आकर्षक डिजाइनों की राखियां बनाकर अपने हुनर का प्रदर्शन किया। विजेताओं को स्कूल के एमडी राजबीर राठी ने पुरस्कृत किया। प्रतियोगिता के शिशु वर्ग से नैंसी प्रथम, शिव द्वितीय और कार्तिक तृतीय स्थान पर रहे। बाल वर्ग से सिद्धि चहल प्रथम, अनन्या द्वितीय, चाहत और एंजेल ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। किशोर वर्ग से आस्तु प्रथम, जन्नत द्वितीय और तनीषा तृतीय स्थान पर रही। यह प्रतियोगिता कला अध्यापक सुनील देशवाल के मार्गदर्शन में संपन्न हुई। कार्यक्रम की अध्यक्षता स्कूल की प्राचार्या नीतू आर्या ने की। इस अवसर पर शिक्षक और विद्यार्थी मौजूद रहे।

गोहाना। विजेता विद्यार्थियों को आशीर्वाद देते हुए गुरुजन।

दिव्यांगों ने अपने गुरुजनों की कलाई पर बांधी राखियां

गोहाना। भाई-बहन के अटूट रिश्ते और भारतीय संस्कृति की सजीव परंपराओं को सहेजते हुए शनिवार को डीबीएम स्पेशल कॉलेज ऑफ एजुकेशन एवं डीबीएम विशेष विद्यालय में रक्षाबंधन पर्व हर्षोल्लास से मनाया गया। समारोह में दिव्यांग विद्यार्थियों ने अपने गुरुजनों की कलाई पर राखियां बांधकर अपने गुरुजनों के प्रति प्रेम और आत्मीयता प्रकट की। दिव्यांग विद्यार्थियों ने जो राखियां अपने गुरुजनों की कलाई पर बांधी उनको उन्होंने अपने हाथों से बनाया। समारोह के लिए मार्गदर्शन संस्थान के एमडी विकास मलिक का रहा। उन्होंने कहा कि रक्षाबंधन का पर्व केवल भाई-बहन के रिश्ते का प्रतीक नहीं अपितु एक-दूसरे की सुरक्षा, सम्मान और प्रेम का संदेश भी देता है।

गोहाना। अपने गुरुजनों की कलाई पर राखी बांधते हुए विद्यार्थी।

छात्रा जारुल और इशिका की राखियां रहीं सबसे सुंदर

गोहाना। अपनी शिक्षिकाओं के साथ राखियां प्रदर्शित करते हुए डीबीएम स्कूल की छात्राएं।

हरिभूमि न्यूज . गोहाना

मदीना गांव में गोहाना-महम मार्ग स्थित डीबीएम पब्लिक स्कूल में राखी बनाने की प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिता में प्रतिभागी छात्राओं ने रचनात्मक प्रदर्शन करते हुए आकर्षक राखियां बनाई। मार्गदर्शन स्कूल के एमडी विकास मलिक का रहा। उन्होंने विद्यार्थियों को रक्षाबंधन के त्योहार का सांस्कृतिक महत्व समझाया। राखी बनाने की प्रतियोगिता रक्षाबंधन पर्व के उपलक्ष्य में आयोजित की गई। प्रतियोगिता में जारुल और इशिका की राखियां सबसे सुंदर रही और इस टीम को प्रथम घोषित किया गया। नेहा व मानसी की टीम द्वितीय और शिवम व शिवानी की टीम तृतीय स्थान पर रही। निर्णायक मंडल में अध्यापिका तम्मना, सुदेश, पूजा शर्मा और नेहा शर्मा शामिल रहीं। विजेता विद्यार्थियों को प्राचार्य जगजीत सिंह मलिक ने सम्मानित किया। इस आयोजन में सतीश, दीपक शर्मा, संदीप मलिक, पूनम, आनंद मलिक व सुमित कुंडू उपस्थित रहे।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि कार्यालय, बीएसएनएल के सामने, पुल के साथ, सोनीपत
फोन : 0130-2989288, 9253681010, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 सें.मी 10X 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2000/- रु. 2500/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
हरिभूमि कार्यालय, बीएसएनएल के सामने, पुल के साथ, सोनीपत
फोन 0130-4012310, 9253681028

रक्षाबंधनः छात्राओं ने छात्रों को बांधी राखियां

गोहाना। शहर में सोनीपत मार्ग स्थित शेर सिंह पब्लिक स्कूल में रक्षाबंधन का पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। समारोह में छात्राओं ने छात्रों को तिलक करके राखियां बांधी और भाई-बहन के इस पवित्र पर्व की सार्थकता को सिद्ध किया। स्कूल के एमडी महेंद्र सिंह मलिक ने कहा कि रक्षाबंधन का पर्व भाई और बहन के पवित्र प्रेम का प्रतीक है। इस पर्व से न केवल भाई और बहन का रिश्ता मजबूत बनता है अपितु विद्यार्थियों को अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं को जानने का अवसर भी प्राप्त होता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य कुलदीप देशवाल ने की। कार्यक्रम को सफल बनाने में शिक्षिका संगीता अरोड़ा, पूजा, ममता, मनीषा, सुदेश और मनीता का विशेष योगदान रहा।

रेलवे ने डाउन लाइन पर पानीपत से दिल्ली तक किया स्पेशल

रक्षाबंधन पर चलाई विशेष ट्रेन, एक रही 55 मिनट लेट

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

दिल्ली रेल मंडल ने रक्षाबंधन पर्व के चलते ट्रेनों में बढ़ती भीड़ को देखते हुए यात्रियों के आरामदायक सफर को लेकर रक्षाबंधन स्पेशल ट्रेन के परिचालन की सौगात दी। जिससे त्योहार पर घर जाने वालों को बड़ी राहत मिली। यह स्पेशल ट्रेन एक दिन के लिए चलाई गई और अप-डाउन दोनों दिशा में एक-एक फेरा लगाया। निर्णय का सबसे अधिक लाभ महिला व पारिवारिक यात्रियों को मिला, जिन्हें सुरक्षित और अपेक्षाकृत कम भीड़ में यात्रा करने का अवसर मिला।

दिल्ली रेल मंडल के अनुसार, रक्षाबंधन पर कुल सात रूटों पर विशेष ट्रेनें चलाई गईं। इनमें पानीपत–दिल्ली–अंबाला, हजरत निजामुद्दीन–जींद जंक्शन, शामली–शाहदरा, नई दिल्ली–रेवाड़ी, गाजियाबाद–अलीगढ़, अंबाला कैंट–पानीपत और हजरत निजामुद्दीन–मथुरा रूट शामिल थे। दिल्ली–अंबाला रूट पर ट्रेन संख्या 04488 सुबह 10:20 बजे पानीपत से रवाना हुई और 16 स्टेशनों पर दो मिनट रुकते हुए दोपहर 1:10 बजे पुरानी दिल्ली पहुंची। हालांकि समय से प्रस्थान करने के बावजूद यह लगभग 55 मिनट की देरी से दिल्ली स्टेशन पहुंची। वापसी में ट्रेन संख्या 04487 दोपहर 1:30 बजे पुरानी दिल्ली से अंबाला के लिए रवाना हुई। सोनीपत, पानीपत समेत 32 स्टेशनों पर एक से दो मिनट के ठहराव के साथ यह शाम 5:30 बजे अंबाला कैंट पहुंची।

यात्रियों ने सुरक्षित सफर किया

रक्षाबंधन पर भीड़ नियंत्रित करने और यात्रियों को सुविधाजनक यात्रा उपलब्ध कराने के लिए यह विशेष ट्रेन सेवा शुरू की गई थी, जो सफल रही। यात्रियों ने आरामदायक और सुरक्षित सफर का अनुभव किया।
-हिमांशु शेखर उपाध्याय, मुख्य जनसंपर्क अधिकारी, उत्तर रेलवे।

haribhoomi.com

हरिभूमि रविवार भारती

छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित

स्वाधीनता दिवस विशेष

रोहतक, रविवार
10 अगस्त 2025

P-1

आवरण कथा
ओम निश्चल

हम सब देशवासी आगामी 15 अगस्त 2025 को भारत के 79वें स्वतंत्रता दिवस का उत्सव मनाएंगे। कदम-कदम आगे बढ़ते हुए हमने कई अभूतपूर्व सफलताएं हासिल कीं, नए-नए मुकाम को छुआ। हम निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर भी हैं। लेकिन आज भी देश में कुछ ऐसी चुनौतियां बरकरार हैं, जिनका निवारण किए बिना हम अपना प्राचीन गौरव प्राप्त नहीं कर पाएंगे। इसके लिए देश के हर नागरिक के मन में स्वाधीनता के प्रति सम्मान भाव होना अत्यंत आवश्यक है।

79वां स्वतंत्रता दिवस

आजादी की फलश्रुति

एक-एक कदम हौले-हौले चलते हुए हम सब भारत देश का 79वां स्वतंत्रता दिवस मनाने जा रहे हैं। एक लंबी यात्रा हमने आजादी के बाद तय कर ली है। 1947 से 2025 तक की स्वातंत्र्योत्तर यात्रा में देश ने तमाम क्षेत्रों में बहुत तरक्की की है, कृषि उत्पादन एवं खाद्यान्न के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता हासिल की है वरना एक ऐसा दौर था, जब गेहूं भी अमेरिका से आयात करना पड़ता था। उद्योग धंधों के क्षेत्र में भी लघु उद्योग सेक्टर और मझोले उद्योगों की स्थापना एवं विकास में देश ने मजबूती से कदम रखा है। तकनीकी सामर्थ्य की दिशा में भी देश ने अग्रतर स्थिति हासिल की है। आजादी के बाद बनी पंचवर्षीय योजनाओं के फलस्वरूप हर क्षेत्र में देश को मजबूत और आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में कार्य हुआ। आजादी के बाद देश में बड़े-बड़े बांध बने, विद्युत परियोजनाएं लगाई गईं, सिंचाई के लिए नहरों का संजाल तैयार किया गया। बड़े-बड़े हाईवेज बने, इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार किया गया। बैंकों का राष्ट्रीयकरण हुआ ताकि हर व्यक्ति को बैंकिंग योजनाओं का लाभ मिले। यानी, आजादी के बाद देश ने हर क्षेत्र में तरक्की की है।

हर वर्ग ने निभाई अपनी भूमिका: आजादी की लड़ाई किसी एक व्यक्ति, मजहब, संस्कृति या समुदाय ने नहीं लड़ी थी। इसमें तैंतीस करोड़ भारतीयों की सामूहिक भागीदारी रही थी। राजनैतिक आजादी तो सन 1947 में ही हमें मिल गई थी। लेकिन आजादी का मिलना तब सार्थक हो सकता है, जब सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक हर क्षेत्र में देश तरक्की, करता हुआ दिखे। यों तो इस आजादी को हासिल करने में नेता, पत्रकार, किसान, मजदूर, किशोर, युवा, वृद्ध, स्त्री-पुरुष सबका योगदान रहा। उसके परिणामस्वरूप ही हमें आजाद भारत मिल सका। आजादी के बाद हासिल उपलब्धियों को तो हम सब देखते ही हैं, लेकिन एक लेखक हर क्षेत्र में आजादी की आकांक्षाओं के प्रतिफल को गहराई से महसूस करता है। वह नेता, अभिनेता, चिंतक, समाजशास्त्री एवं अर्थशास्त्री आदि अनेक भूमिकाओं में होता है। वही होता है, जो बिना लाग-लपेट के देश की वाकई तरक्की को अपने मानक पर कसता है, तभी वह दुष्यंत कुमार के शब्दों में यह लिख सकता है- *यहां तक आते-आते सूख जाती हैं कई नदियां। हमें मालूम है पानी कहां ठहरा हुआ होगा।*

दुर्भाग्यवश धीरे-धीरे कलमकार भी अपनी नैतिकता भूलते गए। इसी पर कवि गोपाल सिंह नेपाली ने अपने एक गीत में लिखा है- *तुझ-सा लहरों में बह लेता/ तो मैं भी सत्ता, गह लेता/ ईमान बेचता चलता तो/ मैं भी महलों में रह लेता/ हर दिल पर झुकती चली मगर/ आंसू वाली नमकीन कलम/ मेरा धन है स्वाधीन कलम/ आजादी मिलने का मोह भंग भी हुआ।*

धीरे-धीरे लेखक की स्वाधीन चेतना भी सुप्त हो गई, उसकी कलम पूंजीपतियों और इजारेदारों के गुण गाने लगी। यही वजह है कि विभाजन के दंश और आजादी के लिए 1857 से किए गए संघर्ष के बाद और जलियांवाला बाग के नृशंस हत्या कांड के बाद मिली आजादी का फल लूटने में होड़ लग गई। देश बनाने वाले और उसे स्वाधीन कराने वाले तो नेपथ्य में चले गए और स्वार्थी लोग चांदी काटने लगे।

आजादी मिलने के बाद आजादी मिलने का मोहभंग भी उतना ही प्रभावी हुआ और होता गया। यह ऐसा ही दौर था, जब 'मैला आंचल', 'पानी के प्राचीर' और 'राग दरबारी' जैसी रचनाएं लिखी गईं। लिहाजा आजादी मिलने की उपलब्धियों की बंदरबांट होने लगी।

आजादी के शुरुआती दौर में अज्ञेय जैसे कद्दावर लेखक ने भी एक निबंध में लिखा था, 'मिला सब कुछः सब बेपेंदी का। शिक्षा मिली उसकी नींव, आत्म गौरव नहीं मिला, राष्ट्रीयता मिली, उसकी नींव, अपनी ऐतिहासिक पहचान नहीं मिली, यानी आजादी में जन्मे-पले मुझको-आजादी के आदि पुरुष को चेहरा मिला, व्यक्तित्व नहीं मिला... और बिना व्यक्तित्व के चेहरा क्या होता है? स्पष्ट है कि वह फकत चेहरा होता है। पहन लो, उतार लो, उस पर अलकतरा पोत दो चूना लगा दो... और यही सब तो हम कर रहे हैं... हर कोई कर रहा है।' (कवि मन, पृष्ठ 63) हमारे समय के एक बड़े कवि का यह विक्षुब्ध कथन है आजादी और उसकी फलश्रुति को लेकर।

क्यों बंटते गए दायरों में हमः यह सोचने की बात है कि जिस जज्बे से आजादी पाने के लिए हर नागरिक संघर्षरत था। सभी धर्म, संप्रदाय, जाति, वर्ण के लोग, यहां तक कि पूंजीपति भी देश की आजादी के लिए तन, मन, धन से लगे थे। सभी में राष्ट्रीय चेतना की अलख जग रही थी। भले आजादी के महासमर में गांधी, सुभाषचंद्र बोस, नेहरू और पटेल जैसे चंद बड़े नायक ही नजर आते हों पर आजादी की लौ जलाने में सभी का बराबर का हाथ रहा है। किंतु क्या हमने कभी सोचा कि इस आजादी का हमने क्या किया? हम मजहबी संकीर्ण दायरों में बंटते गए, हम वर्णों, जातियों, नस्लीय भेदभाव में बंटते गए, हम उत्तर-दक्षिण में बंटते गए। जिस आजादी के लिए सबका खून-पसीना बहा, उस आजादी की हम कीमत वसूलने में लग गए। भारत माता के लिए इससे बड़ी चिंता की बात क्या हो सकती है।

वैश्विक शक्ति बनने का सामर्थ्यः इतनी विषमताओं के बावजूद, 'कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।' भारत विश्व की कूटनीति के सम्मुख अडिग होकर खड़ा रह पाया है तो यह इसकी सफल विदेश नीति का ही परिचायक है। देखते-देखते देश तरक्की की पायदान पर अग्रसर है। देश तमाम क्षेत्रों में आत्मनिर्भर हुआ है, जहां सुई तक नहीं बनती थी, आज हम अनेक चीजें, शोधित तेल, खाद्यान्न, वस्त्रादि विदेशों को निर्यात कर रहे हैं। अमेरिकी प्रभुत्व में सिलीकॉन वैली के भारतीय तकनीकविदों की बड़ी भूमिका है। भारत आजादी के इन अठहत्तर सालों में आज आर्थिक स्तर पर एक महाशक्ति बन चुका है। सैन्य शस्त्रों और अंतरिक्ष शोध के क्षेत्र में हम निरंतर नए क्षितिज को स्पर्श कर रहे हैं। यही नहीं सदियों पुरानी अपनी संस्कृति व ज्ञान परंपरा के नाते हम विश्वगुरु बनने का भी सामर्थ्य रखते हैं। यह ऋषियों, संतों, महात्माओं की तपोभूमि रही है, यह अपरिग्रह, सदाचार, अहिंसा और सर्वधर्मसमभाव की भूमि है। हमने पूरी विश्व-वसुधा को मानवता के नाते एक समझा है। हमने विश्व के कमजोर मुल्कों का हर मुसीबत में साथ दिया, हर स्तर पर विश्व शांति की पहल और अपीलें की हैं। हमने विश्व स्तर पर रंगभेद का विरोध किया। इसीलिए विश्व में हमारी सबसे अलग प्रतिष्ठा है।

सशक्त राष्ट्र निर्माण में निभाएं भूमिकाः हालांकि अभी हमारे सम्मुख चुनौतियां भी कम नहीं हुई हैं। चिंता इस बात की है कि दलीय संकीर्णताएं ज्यादा हावी हैं, जाति, मजहब विचारधारा और सामाजिक स्तर पर लोग बंटे-बंटे से नजर आते हैं। आज आजाद हुए 78 साल हो गए हैं पर हम न भूलें कि अब यह बाहर से दिखने वाली गुलामी का दौर नहीं, यह सूक्ष्म गुलामी का दौर है- हमारी भाषा, हमारी संस्कृति, हमारे सोच पर हमले इतने सूक्ष्म हैं कि उन्हें पहचानना मुश्किल है। ऐसे सूक्ष्म हमलों के प्रति हमें सावधान रहना है। सशक्त राष्ट्र निर्माण के लिए हमें आपस में बांटने वाली सोच और अलगाववादी ताकतों से सावधान रहना होगा। हमें एक ऐसे भारत का निर्माण करना है, जहां हर नागरिक स्वाभिमान का अनुभव कर सके और उसे यह लगे कि यह देश उसका है, उसके सुख-दुख का साथी और उसके हितों का पहरुआ है। तभी सही मायने में देश का हर नागरिक स्वयं को आजाद, समृद्ध और सुरक्षित महसूस करेगा। इसके लिए हम सभी को अपने-अपने स्तर पर भूमिका निभाने के लिए संकल्पित होना होगा। *

सदियों के संघर्ष के बाद आर्थिक रूप से कमजोर देश रहा भारत, आज अगर विश्व की आर्थिक महाशक्ति बना है तो इसके पीछे हमारा निरंतर संघर्ष और सही दिशा में किया गया प्रयास ही रहा है। कैसे हासिल की हमने यह उपलब्धि, उस पर एक नजर।

हर चुनौती को पार कर

हम बने आर्थिक महाशक्ति

उपलब्धि
लोकमित्र गौतम

दो शताब्दियों तक परतंत्र रहने के बाद जब 1947 में भारत आजाद हुआ, तो हमें राजनीतिक आजादी तो मिल गई, लेकिन आर्थिक आजादी अभी भी दूर का सपना था। इस राजनीतिक आजादी के लिए हमने विभाजन की जो विभीषिका झेली थी और ढाई शताब्दियों तक हमारा जिस तरह से औपनिवेशिक शोषण हुआ था, उस सबके कारण कृषि पर आधारित हमारी अर्थव्यवस्था बेहद पिछड़ी हुई थी और औद्योगिकीकरण का हमारे पास लगभग न के बराबर आधार था। ऐसे में आजादी के बाद भारत को अपनी आर्थिक दिशा खुद तय करनी थी। हर तरफ चुनौतियां मुंह बाए खड़ी थीं। लेकिन इन्हीं चुनौतियों के बीच से हमने 78 सालों में अपनी जो आर्थिक यात्रा तय की है, वह महज आंकड़ों का खेल नहीं है। वह हमारे 78 वर्षों की अथक मेहनत, आत्मावलोकन और साहसिक निर्णयों का परिणाम है।

फर्श से पहुंचे अर्श परः हमारी आर्थिक उपलब्धि, किसी तरह की तुलना या इम्तिहान के लिए नहीं है। हमने पिछले 78 सालों में जो उपलब्धियां हासिल की हैं, वो हमारे आत्मगौरव की जीती-जागती कहानियां हैं। साल 1947 में भारत का सकल घरेलू उत्पाद आज की कीमतों पर महज 2.7 लाख करोड़ रुपए था। जबकि 78 सालों बाद आज हम दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था हैं और 2024-25 के आकलन के मुताबिक हमारा सकल घरेलू उत्पाद 33.2 लाख करोड़ रुपए है। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि हमने 78 सालों में करीब 3100 फीसदी आर्थिक प्रगति की है। ये उपलब्धियां और ये आर्थिक विकास हमने पिछले 78 सालों में दिन-रात की मेहनत के बाद हासिल किया है।

करना पड़ा कठिन संघर्षः जब भारत से अंग्रेज गए थे, तो हमारा औद्योगिक उत्पादन नगण्य था। हमारा बुनियादी ढांचा पूरी तरह से ध्वस्त था, क्योंकि आजादी के लिए हमने 1857 से लेकर 1947 तक यानी 90 साल तक युद्ध लड़ा था। इस कारण अंग्रेज इस दौरान भारत के अधिक से अधिक संसाधन लूटकर इंग्लैंड ले गए थे और जब उनको ये मालूम पड़ा कि वह अब भारत में नहीं रह सकते, तो उन्होंने हमारे बुनियादी आर्थिक विकास पर विशेषकर औद्योगिक विकास पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया बल्कि अपने ढाई सौ सालों के कार्यकाल में उन्होंने जो आर्थिक ढांचा खड़ा किया था, उसे भारत से जाने के पहले बुरी तरह से ध्वस्त कर दिया था। जिस समय भारत अंग्रेजों की गुलामी से आजाद हुआ था, हम मूलतः कच्चा माल आपूर्ति करने वाले एक उपनिवेश देश भर थे। इसलिए जरूरी था कि आजादी के बाद भारत का पूरी तरह से आर्थिक पुनर्निर्माण होता और ऐसा ही हुआ।

निरंतर बढ़ते रहे आगेः साल 1950 से 1980 के दौरान भारत ने नियोजित अर्थव्यवस्था की जबर्दस्त कीमत चुकाई। क्योंकि योजनाबद्ध ढंग से विकास करने का एकमात्र यही रास्ता था। जिस कारण लंबे समय तक हमारी आर्थिक विकास दर 3 से 3.5 के बीच रही। लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि इसी विकास दर के दौरान हम परमाणु ऊर्जा, अंतरिक्ष अनुसंधान, हरित क्रांति और देश में भारी उद्योगों का निरंतर जाल भी बिछाते रहे, जो हमारी अथक मेहनत और दूरदृष्टि का नतीजा था।

लागू किए आर्थिक सुधार कार्यक्रमः 78 सालों के विकास क्रम को देखें तो 1991 के बाद वैश्विक दबावों के बीच हमने आर्थिक सुधार कार्यक्रम लागू किए, विशेषकर 1991 में तब, जब हमारे पास सिर्फ 15 दिनों के आयात भर के लिए विदेशी मुद्रा शेष थी। उस समय हमने आईएमएफ के पास अपना सोना गिरवी रखकर कर्ज लिया और आज स्थिति यह है कि हमारा विदेशी मुद्रा भंडार 650 अरब डॉलर से भी ज्यादा का है। 2024 में तो एक समय यह 724 अरब डॉलर की ऊंचाई को भी पार कर गया था। आज भारत आईटी, फार्मा, रक्षा, डिजिटल पेमेंट, अंतरिक्ष और ग्रीन एनर्जी जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण आर्थिक ताकत है।

दूर करनी होंगी कमजोरियांः हालांकि हमारी अर्थव्यवस्था की कुछ बड़ी कमजोरियां भी हैं, जो आज भी हमें प्रतिव्यक्ति आय के मामले में दुनिया के गरीब देशों की कतार का हिस्सा बनाती हैं। आज भी भारत में ग्रामीण क्षेत्रों में पर्याप्त रोजगार नहीं है, जिस कारण गांवों से शहरों की ओर तूफानी रफ्तार से पलायन हो रहा है। हमारे देश के असंगठित औद्योगिक क्षेत्रों की आज भी पहाड़ सरीखी चुनौतियां हैं और आज भी हमारे विदेशी मुद्रा भंडार का 50 फीसदी से ज्यादा हिस्सा कच्चे तेल के आयात पर खत्म होता है। बावजूद इसके भारत आज अपने आपमें एक आर्थिक शक्ति है। साल 2017 के बाद से अब तक हम दुनिया के सर्वाधिक तीव्र गति से विकास करने वाले देश हैं। *

दोहे / प्रो. शरद नारायण खरे

शोभित,सुरभित,तेजमय,पावन अरु अभिराम।
राष्ट्र हमारा मान है, लिए उच्च आयाम।।

राष्ट्र-वंदना मैं करूं, करता हूं यशगान।
अनुपमेय, उत्कृष्ट है, भारत देश महान।।

नदियां, पर्वत, खेत, वन, सागर अरु मैदान।
नैसर्गिक सौंदर्यमय, मेरा हिंदुस्तान।।

लिए एकता अति मधुर, गीता और कुरान।
दीवाली-होली सुखद, एक्यभाव-पहचान।।

सारे जग में शान है, मान रहा संसार।
राष्ट्र हमारा है प्रखर, फैलाता उजियार।।

मातु-पिता, गुरु, नारियां, पातीं नित सम्मान।
संस्कार मम राष्ट्र की, है चोखी पहचान।।

तीन रंग के मान से, हैं हम सब अभिभूत।
राष्ट्रवंदना कर रहे, भारत मां के पूत।।

राष्ट्रप्रेम अस्तित्व में, आया नवल विहान।
कण-कण करने लग गया, भारत का यशगान।।

भारत की सीमाओं पर, जमे हुए हैं लाल।
शौर्य, वीरता देखकर, होते सभी निहाल।।

आजादी की वंदना, करता सारा देश।
आओ, हम रच दें यहां, वासंती परिवेश।।

सरोकार
शैलेंद्र सिंह

तब नई पीढ़ी भी समझेगी

स्वाधीनता की कीमत

देश की जो पीढ़ी पिछली सदी के अंत में या इक्कीसवीं सदी में जन्मी है, उसकी जीवनशैली कई मायने में विशिष्ट है। इसलिए उनको स्वाधीनता की कीमत समझाने के लिए कुछ अलग प्रयास करने होंगे।

आजादी का मतलब सिर्फ गुलामी से मुक्ति भर नहीं होता। आजादी उस आत्मसम्मान, अधिकार और स्वाभिमान की अनुभूति है, जो किसी भी समाज के पूर्ण विकास के लिए बहुत जरूरी है। लेकिन जब हम आजादी की 78वीं वर्षगांठ पर अपनी डिजिटल पीढ़ी यानी जेन जेड और अल्फा जनरेशन की तरफ नजर उठाकर देखते हैं, तो बहुत निराशा होती है, क्योंकि इन्हें आजादी की कीमत का मानो कोई भान ही नहीं है। दरअसल, इन पीढ़ियों के लिए आजादी एक डिफॉल्ट सेटिंग की तरह है। ये पीढ़ी किसी संघर्ष या बलिदान की विरासत की हिस्सेदार नहीं रही है और न ही इसे आजादी के लिए अपनी जिंदगी में किसी तरह की कोई कीमत चुकानी पड़ी है। ऐसे में इन्हें आजादी की कीमत भी समझ आए तो भला कैसे?

डिजिटल जनरेशन की दुनियाः हमारी जेन जेड और अल्फा जनरेशन वास्तव में डिजिटल जनरेशन है। इनकी दुनिया इसके पहले की पीढ़ियों से बिल्कुल अलग है। इन्हें 24X7 मोबाइल चाहिए, रील चैटबॉट और इंस्टेंट रिवॉर्ड्स भी चाहिए। इनके पास सूचना का अकूत भंडार है, लेकिन अपने अनुभवों की मुट्ठी भर पूंजी नहीं है। स्वतंत्रता, अभिव्यक्ति, पसंद का पहनावा और प्यार जैसी हर चीज पर इनका अधिकार है और इनको लगता है यह तो सब जन्मसिद्ध अधिकार है यानी, ये तो हर किसी को मिलते ही मिलते हैं। इनके दिमाग में कभी नहीं आता कि संविधान प्रदत्त अधिकार हमें कितनी कुर्बानियां देकर मिले हैं? हमारी पूर्वज पीढ़ियों को इन्हें पाने के लिए कितनी यातनाएं सहनी पड़ी थीं? न जाने कितने लोग जेल गए, न जाने कितने लोग जेल में ही मर गए, हजारों लोगों ने फांसी का फंदा चूमा। आजादी के लिए अपने सारे सपनों को दांव पर लगा दिया, तब कहीं जाकर हमें यह आजादी मिली है। लेकिन डिजिटल जनरेशन को इस सबका प्रायः कोई एहसास नहीं होता है।

नए जमाने की जीवनशैलीः हालांकि यह नई जनरेशन संवेदनहीन नहीं है। जलवायु परिवर्तन के लिए, मानसिक स्वास्थ्य के लिए, लैंगिक समानता के लिए और जानवरों को लेकर संवेदनशीलता इस पीढ़ी में भी खूब है। मगर अपने जमाने के मुद्दों के लिए। नई पीढ़ी विरोध और विद्रोह करने से नहीं डरती बल्कि पिछली पीढ़ियों के मुकाबले कहीं ज्यादा व्यवस्थित सुधारों और बदलावों की मांग करती है। लेकिन देखने वाली बात यह है कि इसका ज्यादातर विरोध ऑनलाइन होता है या कहें यह ऑनलाइन विरोध के लिए खुद को ज्यादा फिट पाती है। वास्तविक धरातल पर इसे उतरना कम पसंद है। उनकी इस सोच के लिए नई पीढ़ी को नैतिकता का पाठ पढ़ाने वाली पुरानी पीढ़ी को भी कुछ बातें याद रखनी होंगी। पुरानी पीढ़ी के लोग सोचते हैं देश, दुनिया, इतिहास और वर्तमान को लेकर जिस तरह की सोच वो रखते हैं, वैसी ही यह नई पीढ़ी भी रखे। सवाल है, आज की पीढ़ी क्यों अपनी पिछली पीढ़ियों की तरह आजादी को लेकर संवेदनशील नहीं है?

पिछली पीढ़ी निभाए दायित्वः मध्य वय और बुजुर्ग वय से गुजर रही पीढ़ी को समझना होगा कि सिर्फ कुछ ऐतिहासिक घटनाओं की बात करने भर से नई पीढ़ी आजादी की लंबी लड़ाई को लेकर अपने पूर्वजों की कृतज्ञ नहीं हो जाएगी। हमें इस पीढ़ी को उन लाखों लोगों की सच्ची कहानियां भी बतानी होगी, जो साधारण लोग थे और आजादी के लिए कुर्बान हो गए। हजारों किसान, लाखों मजदूर, आदिवासी, स्त्रियां, पत्रकार, आम दस्तकार और शिक्षक जैसे सैकड़ों विभिन्न क्षेत्रों के लोगों ने आजादी के लिए अपने आपको मिटा दिया। हमारी नई पीढ़ियां आजादी में सांस ले सकें, इसलिए पुरानी पीढ़ियों ने खुद को आजादी के संघर्ष की नींव में कैसे गला दिया। हमें नई पीढ़ी को बिना लाग-लपेट के, बिना किसी तरह के अतिवादी जिक्र के, इन आम लोगों के दुख दर्द को भी साझा करना होगा। हमें नई पीढ़ी को ये समझाना होगा कि लाखों जीवंत उदाहरणों से कि हमें जो आजादी मिली है, वह तर्क-वितर्क से नहीं मिली, वह कुछ गिने चुने लोगों के प्रताप से नहीं मिली बल्कि लाखों लोगों की कुर्बानियों से मिली है। जब हम अपनी नई जनरेशन को आजादी की लड़ाई लड़ने वाली पीढ़ी का समूचा ब्योरा सौंपेंगे, तब कहीं जाकर इस पीढ़ी में इस सबके प्रति संवेदना उमड़ेगी। हमें नई पीढ़ी को बताना होगा कि संविधान का उपहार हमें यूं ही नहीं मिल गया।

उनके सवालों का दें तार्किक जवाबः नई पीढ़ी अकसर सवाल पूछती है कि स्वाधीनता सेनानियों ने ऐसा क्यों नहीं किया? वैसा क्यों नहीं किया? तो हमें इस पीढ़ी को बताना होगा कि यह पूरा मसला महज कुछ चाहने और कह देने भर का नहीं था। ये बेहद जटिल और बेहद दुरुह मसले थे, इतना आसान नहीं है यह कहना कि फलां ने यह क्यों नहीं किया? कई बार इतिहास की कुछ विरासतें हमारे नियति का हिस्सा होती हैं। विभाजन भी ऐसी ही नियति थी। पुरानी पीढ़ी को जरूरत है कि वह नई पीढ़ी के लिए सिर्फ उपदेशक न बने, बल्कि इस बात की गहराई से पड़ताल करे कि आखिर उसे आजादी के अथक संघर्ष को लेकर उतनी संवेदनशीलता क्यों नहीं है, जितनी होनी चाहिए? तब हम नई पीढ़ी को आजादी की कीमत समझाने में सफल हो सकेंगे। अगर आज की नई पीढ़ी अपने तरीके से आजादी की परिभाषा गढ़ना चाहती है, तो यह उसका हक है। लेकिन जिन्होंने आजादी की लड़ाई में खुद को कुर्बान करके हमारे लिए स्वतंत्रता अर्जित की है, उन्हें यूं ही नहीं भूला जा सकता। पुरानी पीढ़ी की जिम्मेदारी है कि वह नई पीढ़ी को इसके महत्व और इसकी संवेदनशीलता को समझाए। यह पीढ़ी तेज है, त्वरित अंदाज में निर्णय लेती है, इसलिए अगर इस पीढ़ी को यह बात सही तरीके से बता दी जाए कि हमें जो आजादी हासिल है, वह लाखों लोगों के बलिदान और देशभक्ति का नतीजा है, तो नई पीढ़ी को आजादी का पाठ पढ़ाना और उसके लिए पर्याप्त संवेदनशील बनाना इतना मुश्किल नहीं होगा। *

पुस्तक चर्चा / सरस्वती रमेश

प्रतिबंधित पत्रकारिता के अनसुने किस्से

भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के दौरान सिर्फ आंदोलनकारी ही जेल नहीं भेजे गए बल्कि आंदोलन के समर्थन में पत्र-पत्रिकाएं निकालने वाले अनेक संपादकों को भी जेल में डाल दिया गया था। साथ ही अनेक अखबार या उनके विशेष अंक प्रतिबंधित कर दिए गए थे। ऐसे ही प्रतिबंधित अंकों की खोजबीन कर इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग के प्रोफेसर, संतोष भदौरिया ने उसे पुस्तक रूप दिया है, जिसका नाम है-अंग्रेजी राज और हिंदी की प्रतिबंधित पत्रकारिता।

किताब भारत में स्वाधीनता आंदोलन के विकास की चर्चा से शुरू हुई है, जिसमें लेखक ने इसके विभिन्न चरणों के बारे में संक्षिप्त किंतु उपयोगी जानकारी दी है। इसमें लेखक ने स्वाधीनता आंदोलन के विभिन्न चरणों की विशेषताओं के साथ व्यावहारिक कमियों को भी उजागर किया है। साथ ही आंदोलन के उत्तरोत्तर विकास का क्रमबद्ध तरीके से वर्णन किया है। लेखक ने अंग्रेजी राज में प्रतिबंधित, प्रेस अधिनियम के चलते बंद या आर्थिक अभाव की वजह से बंद हुई सभी पत्र-पत्रिकाओं का लगभग पूरा इतिहास खंगालने का प्रयास किया है।

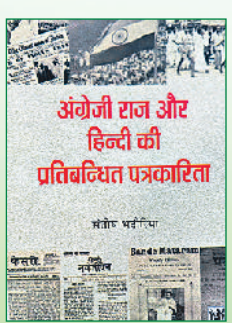

पुस्तक इस मायने में बेहद दिलचस्प है कि प्रतिबंधित पत्रिकाओं में छपे विचार, लेख, कविताओं के अंश भी इसमें दिए गए हैं, जिन्हें आज के समय में पढ़ना एक नए अनुभव से गुजरना है। उस दौर के लेखकों की क्रांतिकारी कविताओं को पढ़कर उस वक्त के भारतीय लोगों के मन में मौजूद राष्ट्रप्रेम के उफान को समझा जा सकता है। मिसाल के तौर पर 'बुंदेलखंड केसरी' में छपी एक कविता को देख सकते हैं, 'देख दशा भारत की हमने निश्चय मन में ठाना है। मातृभूमि की बलिवेदी पर निज बलिदान चढ़ाना है।' प्रतिबंधित पत्र-पत्रिकाओं के छपने के तमाम अनसुने किस्सों को पढ़कर यह पता चलता है कि किताब को लिखने के लिए लेखक ने शोध कार्य में कितना परिश्रम किया है। यह उनके परिश्रम का ही नतीजा है कि किताब ऐतिहासिक विषय पर आधारित होने के बावजूद कहीं भी बोझिल नहीं लगती है। यह पुस्तक उस दौर की प्रतिबंधित पत्रकारिता के क्रमिक इतिहास को सुगठित तरीके से प्रमाणित सूचनाओं के आधार पर प्रस्तुत करती है। *

किताबः अंग्रेजी राज और हिंदी की प्रतिबंधित पत्रकारिता, **लेखकः** संतोष भदौरिया, **मूल्यः** 350 रुपए, **प्रकाशकः** लोकभारती पेपरबैक्स, प्रयागराज

विशेष: जन्माष्टमी, 16 अगस्त

पर्वोल्लास / धीरज बसाक

भगवान श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव को समर्पित जन्माष्टमी का पर्व पूरे देश में असीम श्रद्धा और हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। इस अवसर पर देश के कुछ प्रदेशों एवं प्रमुख कृष्ण मंदिरों में मनाए जाने वाले विशेष उत्सवों के बारे में यहां बता रहे हैं विस्तार से।

श्रद्धा-उल्लास से मनाया जाता है देश-विदेश में जन्माष्टमी पर्व

द्वारकाधीश मंदिर द्वारका, गुजरात

भगवान श्रीकृष्ण की जन्मभूमि मथुरा और वृंदावन है तो उनकी कर्मभूमि द्वारका है। श्रीकृष्ण ने अपने बचपन की अठखेलियां और रास लीलाएं बृज में कीं, तो द्वारका उन्हें द्वारकाधीश यानी द्वारका के राजा के तौर पर जानता है। भगवान श्रीकृष्ण की कर्मभूमि द्वारका में जन्माष्टमी उत्सव बहुत ही भव्यता के साथ मनाया जाता है। इस दिन द्वारका के प्रसिद्ध द्वारकाधीश मंदिर को फूलों और दीयों से सजाया जाता है। इस दिन यहां के खास आकर्षणों में मंगला आरती और झूलन उत्सव प्रमुख हैं। जन्माष्टमी के दिन गुजरात में समुद्र के किनारे स्थित द्वारका नगरी में देश-विदेश के लाखों श्रद्धालु और पर्यटक यहां इस मंदिर के जन्माष्टमी उत्सव में शामिल होते हैं। *

इंफाल की रास लीला, मणिपुर

देश का उत्तर-पूर्व भी कृष्ण भक्ति में डूबा रहने वाला भू-भाग है। विशेषकर मणिपुर में वैष्णो समुदाय, कृष्ण जन्माष्टमी को पारंपरिक रास लीला और विख्यात मणिपुरी नृत्य के विशिष्ट संयोजन के साथ मनाते हैं। इस दिन पूरे इंफाल में जगह-जगह रास लीलाओं का आयोजन होता है। कृष्ण जन्माष्टमी पर इंफाल में आयोजित होने वाली रास लीला पूरी दुनिया में विख्यात है। इस रास लीला में भगवान कृष्ण के जीवन के विभिन्न पहलुओं का अत्यंत भक्तिपूर्ण ढंग से मंचन होता है और यह मंचन विशेष मणिपुरी नृत्य पर आधारित होता है। *

मुंबई का दही हांडी उत्सव, महाराष्ट्र

मुंबई में कृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव देश के दूसरे हिस्सों से बिल्कुल अलग जोश और उल्लास के साथ मनाया जाता है। इस दिन महाराष्ट्र के लगभग हर शहर में और उसमें भी विशेष तौर पर मुंबई में हर गली में एक ऊंचे स्थान पर दो पेड़ों या दो इमारतों के बीच बंधी रस्सी में बीचों-बीच जहां चारों तरफ खुला मैदान होता है, बहुत ऊंचे एक हांडी बांधी जाती है, जिसमें दही, मिठाइयां और रुपए भरे होते हैं। कृष्ण के बाल सखा माने जाने वाले गोविंदा मानव पिरामिड का आकार बनाकर हवा में हांडी तक पहुंचते हैं और फिर इसे तोड़ते हैं। मुंबई में जन्माष्टमी के दिन गोविंदाओं की टोलियां दही-हांडी उत्सव में घूम-घूमकर हिस्सा लेती हैं और जब एक टोली हांडी तक नहीं पहुंच पाती, तो दूसरी टोली को उसके लिए मौका दिया जाता है। हांडी फोड़ने वाले मित्रमंडल/टोली को उत्सव का आयोजन करने वाली सोसायटी या मुहल्ला पुरस्कृत करता है। *

उडुपी श्रीकृष्ण मठ, कर्नाटक

दक्षिण भारत में कृष्ण भक्तों की श्रद्धा का एक महत्वपूर्ण केंद्र उडुपी है। जन्माष्टमी के दिन कर्नाटक के उडुपी स्थित उडुपी श्रीकृष्ण मठ में विशेष पूजा, भजन और सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं। मंदिर में कृष्ण लीला, नाटक, रथयात्रा और ध्वजारोहण जैसे कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इस दौरान पूरे उडुपी शहर में रात्रि जागरण का माहौल होता है। हर तरफ लोग कृष्ण भक्ति में डूबे दिखते हैं। रात 12 बजे भगवान कृष्ण के जन्म के बाद यह उत्सव अपने चरम पर पहुंचता है और फिर दिनभर भजन कीर्तन में रमे रहने वाले भक्तजन प्रसाद खाकर अपना उपवास-व्रत तोड़ते हैं। द्वारका की तरह ही उडुपी में भी जन्माष्टमी पर देश-विदेश से श्रद्धालु और पर्यटक आते हैं। *

विदेशों में जन्माष्टमी उत्सव की छटा

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी सिर्फ भारत में ही मनाया जाने वाला उत्सव नहीं है। यह एक वैश्विक उत्सव है। भारत के बाहर नेपाल, बांग्लादेश, फिजी, मॉरीशस, त्रिनिदाद, सूरीनाम आदि देशों में भी भव्य जन्माष्टमी उत्सव मनाए जाते हैं। नेपाल के पत्थर गांव और काठमांडू स्थित कृष्ण मंदिरों में इस दिन भक्तों की भीड़ उमड़ती है और नृत्य, भजन संध्या तथा झूलों की परंपरा से उत्सव मनाया जाता है। बांग्लादेश में ढाका स्थित जैसोर में जन्माष्टमी को भव्य पर्व के रूप में मनाया जाता है। इस दिन यहां शोभा यात्रा, भगवत गीता पाठ और सांस्कृतिक नाटकों का मंचन होता है। फिजी, मॉरीशस और सूरीनाम में प्रवासी भारतीय समुदाय के लोग कीर्तन मंडलियों के जरिए कृष्णलीला का मंचन और भजन गाते हैं। इसके अलावा लंदन (ब्रिटेन) के इस्कॉन मंदिर, अमेरिका के न्यूयॉर्क, ह्यूस्टन और लॉस एंजिल्स आदि के इस्कॉन मंदिरों में भी जन्माष्टमी में भव्य सांस्कृतिक उत्सव मनाए जाते हैं। इसके साथ ही यूरोप में रूस, यूक्रेन, हंगरी और जर्मनी के इस्कॉन मंदिरों में भी कृष्ण जन्माष्टमी बहुत भव्य तरीके से आयोजित की जाती है। *

काठमांडू स्थित कृष्ण मंदिर में जन्माष्टमी उत्सव

कहानी

आशा शर्मा

स्वतंत्रता दिवस का यह मतलब कतई नहीं होता कि इस दिन को हम मौज-मस्ती करके बिता दें। राष्ट्रीय ध्वज फहरा कर देशप्रेम से ओत-प्रोत ना हों। स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान को याद ना करें। राष्ट्रीय पर्व के महत्व पर केंद्रित कहानी।

आजाद वीकेंड

इस बार लंबा वीकेंड आ रहा है, क्यों न ऋषिकेश चलें? सुना है वहां की कैंप लाइफ बहुत शानदार होती है। खाना-पीना और नदी किनारे मस्ती... क्या कहते हो?' बिजी कॉर्पोरेट लाइफ से उकताई राजी को वास्तव में एक ब्रेक की जरूरत महसूस हो रही थी। 'लंबा वीकेंड? कब है यह सुनहरा अवसर?' साथी श्यामली ने चहकते हुए पूछा तो राजी ने टेबल पर रखा कैलेंडर उसके सामने कर दिया। शुक्रवार को स्वतंत्रता दिवस का अवकाश और उसके बाद शनिवार और रविवार... देखते ही श्यामली भी तुरंत तैयार हो गई। समीर और अयान तो जैसे अवसर की तलाश में ही थे। सबने शुक्रवार की सुबह ऋषिकेश जाने का कार्यक्रम बना लिया।

'लेकिन उस दिन तो ऑफिस में भी झंडारोहण होगा ना, उसे छोड़कर कैसे जा सकते हैं?' अयान ने प्रश्न उठाया।

'क्या यार अयान...! एक तुम्हारे नहीं होने से क्या वहां का सारा प्रोग्राम कैंसल हो जाएगा? चिल करो यार। आजादी का जश्न मनाने ही तो जा रहे हैं हम लोग।' राजी ने बेपरवाही से कहा और उसके बाद सभी प्रश्न समाप्त हो गए। शुक्रवार यानी स्वतंत्रता दिवस की सुबह छह बजे चारों दोस्त कार से रवाना हुए। समीर गाड़ी चला रहा था, अयान उसकी बगल में बैठा था। राजी और श्यामली पीछे की सीट पर पालथी मारकर बैठी थीं।

सुबह की ठंडी हवा से अठखेलियां करते चारों बढ़े जा रहे थे। रास्ते में आने वाले गांवों में स्कूल जाते हाथों में तिरंगा लिए बच्चे सम्मोहित कर रहे थे। जगह-जगह स्कूल और अन्य प्रतिष्ठानों में देशभक्ति के गीत गूंज रहे थे। जोशीले गाने सुनकर श्यामली के रोम खड़े हो गए। शरीर में सिहरन सी दौड़ गई।

'क्या सचमुच लोग आजादी के लिए इतने दीवाने हो गए थे कि उन्हें मरने तक से डर नहीं लगा? हमें देखो! जरा सा भी दर्द बर्दाश्त नहीं होता।' श्यामली ने अचानक कहा तो सब उसे आश्चर्य से देखने लगे।

'जरूर हुए ही होंगे, आजादी क्या प्लेट में परोसी हुई मिली थी। मेरे दादा जी बताते थे कि उनके पिताजी स्वतंत्रता सेनानी थे। नेताजी की आजाद हिंद फौज के सिपाही। आज भी उनकी तस्वीर हमारे घर में रखी है।' अयान ने गर्व से बताया और गर्दन घुमाकर बारी-बारी से सबकी तरफ देखा। उसे बाकी दोस्तों की आंखों में अपने लिए अतिरिक्त सम्मान दिखाई दिया। सबके मुंह आश्चर्य से टेढ़े हुए सो अलग। तभी अचानक समीर ने जोरदार ब्रेक लगाया। पीछे की सीट पर बैठी राजी और श्यामली का सिर आगे की सीट से टकरा गया।

'यह क्या पागलपन है समीर? ऐसे कैसे गाड़ी चला रहे हो? मरवाओगे क्या?' सब एक साथ चिल्लाए। 'वो अचानक सामने से वह लंगड़ा व्यक्ति आ गया था। अभी तो मर ही जाता!' कहते हुए झल्लाए समीर ने गाड़ी रोकी और लपक कर नीचे उतरा। देखा तो वह लंगड़ा व्यक्ति अभी भी उसी तरह सड़क के बीचों-बीच खड़ा था।

'मरोगे क्या? इस तरह कौन बीच सड़क पर खड़ा हो जाता है।' समीर उस भिखारी जैसे दिखने वाले बूढ़े दिव्यांग व्यक्ति पर चिल्लाया। वह व्यक्ति अपनी बैसाखी बगल में दबाए चुपचाप सावधान की मुद्रा में खड़ा रहा। अब तक बाकी तीनों भी वहां आ चुके थे। उन्हें भी यह देखकर हैरानी हुई कि उस व्यक्ति के चेहरे पर अभी-अभी घटित होने वाले एक्सीडेंट के बारे में सोचकर किसी भी प्रकार की घबराहट के निशान दिखाई नहीं दे रहे हैं। तभी उस व्यक्ति ने अपनी पोजीशन बदली और बैसाखी को ठीक से अपनी बांह के नीचे दबा लिया।

'सामने उस स्कूल में राष्ट्रगान की धुन बज रही थी ना, इसलिए मैं खड़ा हो गया। माफ करना लेकिन मैं अपने राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान के प्रति अपनी भावनाओं और उसके सम्मान को नजरअंदाज नहीं कर सका। आप लोगों को तो शायद पता भी नहीं होगा कि राष्ट्रगान के समय ध्वज के सम्मान में सावधान खड़ा होना चाहिए।' व्यक्ति ने कहा तो सबकी निगाहें झुक गईं। सच जानकर समीर को अपने व्यवहार पर बहुत दुःख हुआ। वह हाथ पकड़ कर उस व्यक्ति को सड़क पार करवाने लगा। तभी उस व्यक्ति ने अपनी बैसाखी हटाई और लकड़ी के सहारे अपने पांवों से चलने लगा। सब एक-दूसरे को आश्चर्य से देखने लगे। बूढ़े व्यक्ति का यह आचरण किसी के भी समझ में नहीं आया, किंतु वह व्यक्ति उनकी दुविधा समझ गया था।

'मैं भला आजादी की कीमत कैसे भूल सकता हूं। मेरे पिताजी ने आजादी की लड़ाई में भाग लिया था और अंग्रेजों की गोली लगने से वे अपना एक पांव गंवा बैठे थे। उन्हीं को याद करते हुए मैं आज के दिन बैसाखी के सहारे चलता हूं ताकि उनकी कुर्बानी भूल नहीं जाऊं। आज की पीढ़ी को भले ही यह मजाक लगता होगा, लेकिन हमारी पीढ़ी के लिए यह दिन कितना महत्व रखता है, यह मैं बता नहीं सकता।' कहते हुए वह व्यक्ति भावुक हो गया। अब तक सब उसका हाथ थामे सड़क के दूसरी पार भी आ गए थे। सबकी निगाहें झुकी हुई थीं।

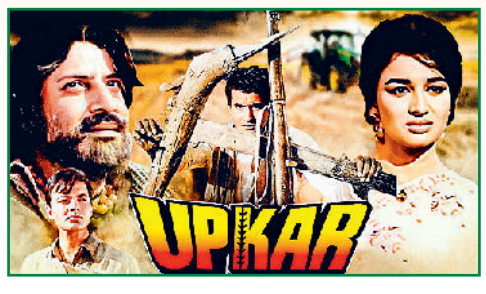

'मुझे लगता है हमें वापस जाना चाहिए। क्यों न आज के दिन हम कोई देशभक्ति की भावना वाली फिल्म देखें?' राजी ने नया प्रस्ताव रखा तो सब एक बार फिर से हैरान हो गए लेकिन तुरंत संभल भी गए।

'ठीक कहते हो लेकिन उससे पहले ऑफिस जाकर तिरंगे को सलामी देंगे।' अयान ने आगे जोड़ा तो सब एकमत हो गए और अब गाड़ी ऋषिकेश जाने की बजाय ऑफिस की तरफ दौड़ रही थी। *

नया दौर

लोकमित्र गौतम

भगवान कृष्ण के प्रति भक्तिभाव रखने वालों के लिए तो वे पूज्य हैं ही। लेकिन उनके व्यक्तित्व में कई ऐसे गुण हैं, जो उन्हें आज के युवाओं के लिए भी आइकन बना देता है। इसीलिए देश-दुनिया के युवाओं में जन्माष्टमी की धूम दिखती है।

रील्स-मीम्स के दौर में युवाओं के ग्लोबल आइकन हैं श्रीकृष्ण

आज का दौर तेजी से बदलते दृश्यों और पल भर की लोकप्रियता का दौर है। यही कारण है कि आज बड़े-बड़े त्योहारों और उत्सवों का रंग भी नई पीढ़ी के सिर चढ़कर आसानी से नहीं बोलता। लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि इसी रील्स और मीम्स के दौर में जब सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स जैसे इंस्टाग्राम, यूट्यूब, फेसबुक और एक्स पर रील्स, मीम्स और वायरल ट्रेंड संस्कृति का नया चेहरा बन गए हैं, तब जन्माष्टमी दुनिया के लगभग 108 देशों में मनाई जा रही है। और हॉटस्टार जैसे टीवी चैनल जो कि पूरी तरह से खेलों और वेब सीरीज को समर्पित हैं, महीनों पहले से बार-बार विज्ञापन करते हैं कि जन्माष्टमी का कार्यक्रम सीधे प्रसारित किया जाएगा। अगर जन्माष्टमी जैसे पर्व के प्रति पूरी दुनिया में इस किस्म का आकर्षण उभर रहा है, तो इसका अर्थ केवल धार्मिक नहीं है बल्कि इसके पीछे सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक और डिजिटल अनुकूलता का गहरा संबंध है।

परंपरा का डिजिटलीकरण: हर साल भाद्रपद की अष्टमी को मनाया जाने वाला कृष्ण जन्म का पर्व जन्माष्टमी भारतीय संस्कृति में पारंपरिक रूप से मनाया जाता है। जैसा कि हम सब जानते हैं जन्माष्टमी की रात 12 बजे कंस की जेल में बंद बहन देवकी की कोख से एक दिव्य बालक श्रीकृष्ण जन्म लेते हैं, जो धर्म की पुनर्स्थापना का सूत्रधार बनते हैं। आमतौर पर मंदिरों में भजन संकीर्तनों तक सीमित रहने वाले श्रीकृष्ण, आज की डिजिटल दुनिया में भरपूर स्वीकृत हुए है, तो इसके कुछ कारण हैं।

कृष्ण केवल भगवान नहीं, एक विचार हैं: आज का युवा सही मायने में वैश्विक नागरिक है। एक ऐसी दुनिया का नागरिक, जो अपनी पारंपरिक संस्कृति से अगर जुड़ना जानता है, तो उसकी बेड़ियों को तोड़ना भी जानता है। हां, यह जरूर है कि आज का युवा अपने करियर की चिंता में रहता है। आज का युवा रिश्तों में उलझा है और जीवन के नए अर्थ तलाश रहा है। आज का युवा सिस्टम से सवाल करता है। ऐसे में श्रीकृष्ण उसका मार्गदर्शन करते हैं। कृष्ण का पूरा जीवन संघर्षों से भरा रहा। कष्ट और संकटों के बीच जन्म, बचपन में वध के अनेक प्रयास, युवावस्था में युद्ध, राजनीति, मित्रता और प्रेम के भ्रम, फिर भी इन सारी परेशानियों और संघर्षों के बीच कृष्ण मुस्कुराते रहते हैं, नाचते रहते हैं और बांसुरी बजाते रहते हैं। यह इतना उद्दाम जीवन चरित्र है, जो दुनिया भर के, हर संस्कृति के युवाओं को अपनी ओर खींचता है। कृष्ण सीख देते हैं कि जियो और वह भी पूरी लय में, इसलिए वे युवाओं के चहेते बने हुए हैं।

संस्कृति की सॉफ्टपावर: एक तरफ कृष्ण का अद्भुत कैरेक्टर युवाओं को अपनी तरफ चुंबक के माफिक खींचता है, तो दूसरी तरफ जन्माष्टमी का ग्लोबल आकर्षण यह दर्शाता है कि भारतीय संस्कृति सीमाओं में कैद नहीं है। यही वजह है कि आज न्यूयॉर्क से लेकर नैरोबी तक और लंदन से लेकर सिडनी तक कृष्ण भक्तों ने जन्माष्टमी को ग्लोबल फेस्टिवल बना दिया है। रासलीला, दही हांडी और कृष्ण जन्मोत्सव आज भारत की विदेशों में सांस्कृतिक पहचान है। सिर्फ पहचान ही नहीं, यह सांस्कृतिक कूटनीति का हिस्सा भी है। जन्माष्टमी के गीत, डांस, कॉस्ट्यूम ट्रेंड और डिजिटल झांकियां अब डिजिटल आर्ट और क्रिएटिविटी का हिस्सा हैं। ये बदलाव साबित करते हैं कि कृष्ण ग्लोबल आकर्षण का विषय क्यों हैं? कृष्ण का विचार और कृष्ण का होना उस दौर में भी नया और आधुनिक था और इस दौर में भी नया और आधुनिक है। डिजिटल युग में कृष्ण की प्रासंगिकता पहले से ज्यादा बढ़ गई है।

कृष्ण की यूनिवर्सल अपील: श्रीकृष्ण केवल हिंदू धर्म के देवता भर नहीं हैं। वे एक फिलॉस्फर हैं, वे एक योद्धा हैं, वे एक प्रेमी हैं, वे एक दोस्त हैं, वे एक रणनीतिकार हैं और वे एक मेंटर भी हैं। हर संस्कृति में वह किसी न किसी रूप में फिट बैठते हैं। यही कारण है कि वह हर संस्कृति में स्वीकार्य हैं। *

बॉलीवुड ट्रेंड/ अशोक जोशी

हिंदी फिल्मों के आरंभिक दौर से ही देशभक्ति पर आधारित फिल्में बनती रही हैं। इन्हें एंटरटेनिंग बनाने के लिए काफी फिल्मी मसाले भी डाले जाते हैं। यही वजह है कि ऐसी फिल्मों को दर्शक भी खूब पसंद करते हैं। देशभक्ति पर आधारित कुछ चर्चित फिल्मों पर एक नजर।

हिंदी फिल्मों में देशभक्ति के रंग

पंद्रह अगस्त हो या छब्बीस जनवरी, राष्ट्रीय पर्व आते ही देशवासियों में देश प्रेम और देशभक्ति की भावनाएं हिलोरे लेने लगती हैं। देश प्रेम की यह भावना हिंदी फिल्मों में भी खूब उभर कर आई है। यह बात अलग है कि समय के साथ हिंदी फिल्मों में देश प्रेम को व्यक्त करने के तरीके बदलते रहे हैं।

ब्रिटिश काल में हिंदी फिल्में

आजादी के पहले देशभक्ति पर आधारित तमाम फिल्मों में ब्रिटिश शासन को निशाने पर रखकर फिल्मकार देशभक्ति पर आधारित फिल्में बनाते थे। उस दौर में सेंसरशिप सख्त होने के कारण वे सीधे-सीधे तो अंग्रेजों पर हमला नहीं कर सकते थे, लेकिन परोक्ष या सांकेतिक रूप से ब्रिटिश शासन के खिलाफ हिंदी फिल्में और उनके गीत स्वंतत्रता संग्राम का खूब समर्थन करते थे। इस संदर्भ में कवि प्रदीप का लिखा गीत 'दूर हटो ऐ दुनिया वालो हिंदुस्तान हमारा है' प्रासंगिक है। यह गीत वैसे तो ब्रिटिश राज के विरुद्ध था, लेकिन ब्रिटिश अधिकारियों को इस गीत के बारे में बताया गया कि ब्रिटिश शासन का पक्ष लेकर विश्व युद्ध में उसके खिलाफ लड़ने वालों से कहा जा रहा है कि 'हिंदुस्तान हमारा' अर्थात ब्रिटिश शासन का है।

शुरुआती दौर की फिल्मों में देशभक्ति

आजादी के बाद एक-दो दशक तक बनने वाली देशभक्तिपूर्ण फिल्मों में स्वतंत्रता संग्राम के किस्सों को ही ज्यादातर दिखाया जाता रहा। इन फिल्मों में दिलीप कुमार की 'शहीद' प्रमुख थी। उन दिनों शहीद भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद और झांसी की रानी जैसे महान चरित्रों को केंद्र में रखकर सेल्यूलाइड पर देश प्रेम के रंग भरे गए। 1962 के भारत-चीन युद्ध के विषय पर चेतन आनंद ने 'हकीकत' जैसी सार्थक फिल्म बनाई।

देशभक्ति फिल्मों ने मनोज को बनाया भारत कुमार

भगत सिंह के चरित्र पर आधारित फिल्म 'शहीद' की सफलता के बाद मनोज कुमार को जैसे फिल्म निर्माण की एक अलग दिशा मिल गई। इसके चलते ही मनोज कुमार ने 'उपकार', 'पूरब और पश्चिम', 'क्रांति', 'रोटी कपड़ा और मकान' जैसी कई फिल्में बनाईं, जो या तो देशभक्ति पर आधारित थीं या इन फिल्मों में कहीं न कहीं देश प्रेम की भावना घुली-मिली थी। इन फिल्मों को दर्शकों का भी भरपूर प्यार मिला। अपनी देशभक्ति आधारित फिल्मों की वजह से ही मनोज कुमार बॉलीवुड में 'भारत कुमार' के रूप में मशहूर हो गए।

बदल गया देशभक्ति फिल्मों का स्वरूप

आगे चलकर, खासतौर से भारत-पाकिस्तान युद्ध के बाद देशभक्ति की फिल्मों का एक महत्वपूर्ण विषय भारत और पाकिस्तान का युद्ध और आतंकवाद बन गया। जे.पी. दत्ता ने भारत और पाकिस्तान युद्ध पर आधारित फिल्म 'बॉर्डर' का निर्माण किया। इस मल्टी स्टारर फिल्म को दर्शकों का खूब प्यार मिला। 'बॉर्डर' को कुछ हद तक 'हकीकत' की शैली में बनाने का प्रयास किया गया। इस फिल्म के गीत भी खूब लोकप्रिय हुए थे। जावेद अख्तर द्वारा लिखा गया फिल्म का गीत 'संदेसे आते हैं' उन दिनों खूब लोकप्रिय हुआ था। यह गीत 15 अगस्त, 26 जनवरी जैसे अवसरों पर आज भी बजाया जाता है।

निर्माता-निर्देशक अनिल शर्मा की सनी देओल और अमीषा पटेल को लेकर बनाई गई फिल्म 'गदर : एक प्रेम कथा' में भी भारत-पाकिस्तान एंगल था। 'हिंदुस्तान जिंदाबाद था, हिंदुस्तान जिंदाबाद है और हिंदुस्तान जिंदाबाद रहेगा' जैसे देशभक्ति से भरे डायलॉग्स ने फिल्म की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

उसके बाद आई आमिर खान की 'सरफरोश' में भी देशभक्ति का यही रंग था। इसमें आतंकी नेटवर्क के तार पाकिस्तान से जोड़कर दिखाया गया था। इस फिल्म को भी अच्छी सफलता हासिल हुई थी। हालांकि 'बॉर्डर' के बाद न तो जेपी दत्ता सफल हो पाए और न ही अनिल शर्मा बॉक्स ऑफिस पर गदर मचा सके। देशभक्ति पर आधारित उनकी 'रिफ्यूजी' और 'वीर' बॉक्स ऑफिस पर बुरी तरह फ्लॉप रहीं। हालांकि अनिल शर्मा की 'गदर 2' ने अच्छी सफलता हासिल की।

देशभक्ति फिल्मों का नया ट्रेंड

पिछले कुछ वर्षों से अक्षय कुमार को भारत कुमार की पदवी मिली हुई है। उनकी कई फिल्मों में देशभक्ति की भावना खूब नजर आती है। पाकिस्तान को कोसने, उसकी नापाक हरकतों और उसके आतंकी मंसूबों को भी अक्षय कुमार की कुछ फिल्मों में दिखाया गया है। 'केसरी', 'बेबी', 'एयरलिफ्ट', 'हॉलिडे' और 'रुस्तम' जैसी अक्षय कुमार कई फिल्मों में देशभक्ति के अलग-अलग रंग दिखे। हाल में आई 'केसरी 2' से वह एक बार फिर देश प्रेम की भावना दर्शकों तक पहुंचाने में सफल रहे हैं।

भारतीय युवाओं में क्रिकेट से लेकर राजनीति हर क्षेत्र में पाकिस्तान से आगे रहने और उसे पराजित करने की भावना को उभारने में भी फिल्मकारों को महारथ हासिल है। इसीलिए ऐसी फिल्में भी खूब बनती हैं। *